द्रव्यशुद्धि

गोस्वामी श्रीपुरषोत्तमजी

॥द्रव्यशुद्धिः॥
(भावदर्शिनी व्रजभाषाटीका)

Contents

श्रीवल्लभाचार्यजीकूं नमन करके, भगवत्सेवामें उपकार करवेवारी बाहर-भीतरकी पदार्थकी शुद्धिको विचार या ग्रन्थमें करो जाय हे.1

अनेक धर्मशास्त्रके ग्रन्थनमें द्रव्यशुद्धीको विवेकपूर्वक विचार कियो हे, पर वो मन्दबुद्धिनके समझमें नहीं आवे हे तासूं ये ग्रन्थ बनायो जाय हे.2

1. स्नान तथा आचमन को विचार

प्रायश्‌चित्त प्रकरणमें याज्ञवल्क्यको एसो वचन हे के

“रजस्वला, शव, चाण्डाल, पतित, सूतिका(स्वावडवारी), शावाशौची(सूतकी) इनको जो स्पर्श भयो होय तो सचैलस्नान करनो. ओर रजस्वलादिकने जाकूं छूयो हे वो जो ओरकूं छूले तथा वो भी ओरकूं छूले तो वा तृतीयकूं आचमन करनो ओर “आपोहिष्ठा” इत्यादि 3 मन्त्रनको जप करनो और गायत्रीको मनसूं एक बेर जप करें”.

यहां ‘तै:’ ये बहुवचन कह्यो हे तासूं ओर भी जो कोई अपवित्र हें उनके स्पर्शमें आचमन करनो चहिये एसें यहां शास्त्रार्थसूं सिद्ध होय हे. तासूं रजस्वलाप्रभृतिके स्पर्शमें सचैलस्नान करनो. अपरार्कमें मनुवचन एसो हे के शवस्पर्शिके स्पर्शमें भी स्नान करनो चहिये. मर्यादासिन्धुमें या मनुवाक्यको एसो अर्थ करो हे के, रजस्वलादिने जाकूं छूयो होय वाने ओरकूं छूयो होय तो वा तीसरेकूं भी सचैलस्नान ही करनो चहिये. च्यवनऋषिको वचन एसो हे जो

“कुत्ता, चाण्डाल, प्रेतधूम(मुर्दाको धूंआ) देवद्रव्यसूं जीवेवारो, ग्रामयाजक (सगरेगामकूं यजन करायवेवारो), सोमवल्लीको बेचवेवारो, चिति(मुर्दाकीचिता/चिताके ताईं आयो काष्ठ), मद्य, मद्यकोपात्र, गीलो हाड, शवस्पर्शी, महापातकी, शव(मुर्दा) इनमेसूं काहूको भी स्पर्श भयो होय तो सचैलस्नान जलमें उतरकें करनो. फिर अग्निको स्पर्श करके आठसे गायत्रीको जप करनो. फिर घी थोडो खायकें दूसरी बेर शुद्धस्नान करनो, फिर आचमन तीन बेर करनो तब शुद्ध होय हे”.

तासूं सिद्धान्त ये भयो के, रजस्वलादिके स्पर्शमें भी तथा उनके स्पर्शीनके स्पर्शमें भी सचैलस्नान ही करनो. इन सिवाय ओर जो कोई अपवित्र हें, जिनको नाम अगाडी लियो जायगो, उनके स्पर्शमें आचमन करनो ये बात याज्ञवल्क्यके वचनसूं अगाडी दिखाई जायगी.

अब यहां रजस्वलादि स्पर्शमें ओर भी विशेष दिखायो जाय हे. मर्यादासिन्धुमें पराशर वचन कह्यो हे के “जो रजस्वलाको स्पर्श साक्षात् भयो होय अथवा वस्त्रादिकके अन्तरसूं भयो होय, पर सचैल स्नान ही करनो चहिये”. चारों वर्णकी रजस्वलामेंसूं कोई

वर्णकी रजस्वला होय पर उनके स्पर्शमें समान अशुद्धि होय हे, तासूं सचैल स्नान करनो एसो ऋषिनको मत हे.

2. वस्त्रादिकके स्पर्शमें तथा बुद्धिपूर्वक स्पर्शमें स्नानादिको विचार

पृथ्वीचन्द्रोदयमें प्रचेता ऋषिको वचन हे के "वस्त्रादिकके अन्तरसूं भी जो स्पर्श हे वो साक्षात्स्पर्श ही कहवावे हे ओर वामें भी जो साक्षात्स्पर्शकी शुद्धि हे सो ही करनी".

पराशरको मत एसो हे के "जाके छूएसूं स्नान करनो पडे वाकूं जो काष्ठ इत्यादिसू छूयो होय तो आचमनसूं शुद्धि होय हे, जेसे नावमें ओर लोग भी बेठे होंय तो भी आचमनसूं शुद्धि होय हे तेसें".

सबको सार ये हे चाण्डाल, रजस्वला, महापातकी, सूतिका(स्वावडवारी) शव, इनको वस्त्र, काष्ठसूं भी जो स्पर्श करो होय तो भी सचैल स्नान करनो. ओर सूतकीको स्पर्श काष्ठादिकसूं करो होय तो आचमनसूं शुद्धि होय हे. क्योंकि सूतकीको नित्य सूतक ओछो होतो जाय हे. तासूं याज्ञवल्क्यको मत जो पहले कह आए के रजस्वलादि सिवाय ओर अपवित्रके स्पर्शमें आचमनसूं शुद्धि होय हे ये बात भी सङ्गत होय हे. रजस्वलादिकने जाकूं छूयो, वाने ओरकूं छूयो, वाने ओरकूं छूयो होय तो वा तीसरेकूं आचमनसूं ही शुद्धि समझनी एसो संवर्तको मत हे. ओर वस्त्रादिक पदार्थ रजस्वलादिसूं छूए होंय उनसूं ओर वस्त्र छूय जाय, उनसूं ओर छूएं तो विन तीसरे वस्त्रनकी प्रोक्षणसूं ही शुद्धि हे. तीसरे वस्त्रादिक की शुद्धि प्रोक्षणसूं होय हे ये बात 'तथा' इन अक्षरनके स्वारस्यसूं सिद्ध होय हे. तीसरेकूं आचमनसूं होय हे ये बात बुद्धिपूर्वक स्पर्श न करो होय तहां ही समझनो. क्योंके बुद्धिपूर्वक स्पर्शमें गौतमने तीसरेकूं भी सचैल स्नान ही करनो बतायो हे. मर्यादासिन्धुमें देवल ऋषिको वचन भी एसो हे के तीसरेकूं स्नानसूं ओर चोथेकूं आचमनसूं शुद्धि होय हे. एसे ही वस्त्रादिक जो तीसरे हें उनकूं धोनो ओर चोथेनकूं प्रोक्षण करनो. ओर एकने रजस्वलादिको स्पर्श बिना जाने कियो ओर दूसरेने वाको स्पर्श जानके कर्योहोय तथा तीसरेने दूसरेकूं भी जानके छूयो होय तो वा तीसरे कूं स्नान लगे हे. तथा जहां पहलेने जानके स्पर्श कियो ओरननें फिर उनको स्पर्श अनजाने कियो होवे वा पक्षमें भी तीसरेकूं स्नान समझनो. ओर विशेष द्रव्यशुद्धि प्रकार अमेध्यादि स्पृष्ट पात्रके विचारके प्रकरणमें कहेंगे.

रजस्वलादिके स्पर्श भए पे स्नान केसें करनो ये बात संवर्त ऋषीने अच्छी रीतिसूं बताई हे सो अगाडी कही जाय हे.

3. शीतोदक-उष्णोदकसूं स्नानको विचार

रजस्वलादिकसूं स्पर्श भयो होय तो तीर्थादिकमें जायके शीतोदकसूं स्नान करनो चहिये. मनुने एसे प्रकरणमें उष्ण जलसूं न्हायवेको निषेध कियो हे तासूं, ओर जो

तीर्थादिक न होय तो उष्ण जलसूं भी स्नान शंखऋषिने करनो बतायो हे. तासूं नित्य, नैमितक, काम्य क्रियाङ्ग(कर्माङ्गभूत) मलस्नान ——ये स्नान तीर्थाभावमें उष्णोदकसूं भी करने. रात्रिमें भी अपवित्र स्पर्शमें स्नान करवेमें दोष नहीं हे.

4. रात्रिमें स्नान करवेको विचार

"चाण्डाल रजस्वलादिको रात्रिमें स्पर्श भयो होय तो रात्रिमें ही स्नान करनो" एसो यमको वचन हे. जो रात्रिकूं अज्ञानसूं नहीं न्हाय तो, वाको वो दोष शतगुण होय जाय हे. या विषयमें पराशर ऋषिने विशेष कह्यो हे. यथा

"जो सूर्यास्त भये पे चाण्डाल, रजस्वला, पतित, स्वावडवारी आदि अपवित्रनसूं छूयो होय तो रात्रिमें जलाशयमें स्नान करवेको तथा आचमन करवेको निषेध हे. तासूं दिवसमें जो जल जलाशयमेंसूं निकासो होय वासूं स्नान करनो. स्नानके जलमें सुवर्ण डारनो, पासमें अग्नि जरावनो, ब्राह्मणकी आज्ञा लेनो, आकाशकूं देखनो, फिर स्नान करेसूं शुद्धि होय हे".

देवल ऋषिको भी ये ही मत हे. जल निकासकें स्नान करेसूं जो ये शुद्धि बताई हे सो रजस्वलादि स्पर्शमें ही समझनी. शवस्पर्शमें तथा शवस्पर्शीके स्पर्शमें तो जलाशयमें उतरके स्नान करेसूं ही शुद्धि होय हे एसो वृद्धशातातप ऋषिको मत हे. ओर रजस्वलादि स्पर्शमें भी जो दिनको निकासो जल हाजर नही होय तो जलाशयमें उतरकें भलें स्नान करे, पर अग्निकूं पास बरामनो चहिये. जो अग्नि भी हाजर न होय तो सोनेको छल्ला उङ्गरीमें पहरकें अथवा सोनेको तार ही उङ्गरीमें लिपेटके स्नान करेसूं शुद्धि होय हे एसो अत्रि ऋषिको मत हे.

5. रात्रिमें नदीप्रभृति जलाशयमें स्नान करवेको विचार

रात्रिमें नदीमें स्नान करवेको दूसरो प्रकार कात्यायन ऋषिने कह्यो हे के यद्यपि रात्रिमें जलमें प्रवेश करवेको तथा स्नान करवेको तथा जल निकासवेको निषेध हे पर "धाम्नो-धाम्नोराजन्नितो वरुण नो मुञ्च" ये जो तैत्तिरीय शाखाको मन्त्र हे ताकू पढकें, जलाशयमें रात्रिकूं भी स्नान करे तो देष नहीं हे. ओर रात्रिमें जलाशयमेंसू जल निकासनो होय तो जब तांई जल निकासे तब तांई प्राणायाम करे एसें बौधायन ऋषिको वचन 'मर्यादासिन्धु'में लिख्यो हे.

अब सबको सार ये हे जो दिनमें रजस्वलादिको स्पर्श भयो होय तो तीर्थादिकमें दिनमें ही शीतजलसूं स्नान करनो. ओर तीर्थादिक नहीं होय तो उष्णदकसूं अथवा पराएके घरके जलसूं स्नान करनो. ओर रात्रिमें जो रजस्वलादि स्पर्श भयो होय तो, रात्रिमें ही तीर्थपे जायकें अग्नि प्रज्वलित करकें "धाम्नो" इत्यादि पूर्वोक्त मन्त्र पढकें जलमें गोता मारनो.

ओर तीर्थ न होय तो दिनमें निकासे भए जलसूं अथवा उष्णोदकसूं अथवा पराए जलसूं स्नान करनो. स्नानके जलमें सुवर्ण डारनो ओर पास अग्नि राखिके वाको दर्शन करते जानो. ओर अग्नि भी नही होय तो, सोनेको छल्ला अथवा तार हाथमें राखकें स्नान करनो. ओर वो भी न मिले तो पूर्वोक्त वस्तुमेंसूं जो मिले वो ही लेनी ओर रात्रिमें भी जल निकासकें स्नान करनो, फिर दोषकी निवृत्तिकें तांई प्राणायाम यताशक्ति करनो. ओर कछू भी न बन सके तो केवल हरिस्मरण करकें ही स्नान करे पर रात्रिमें अपवित्र ही न रह्यो आवे. ओर शवके स्पर्शमें तथा शवस्पर्शीनके स्पर्शमें तो जलाशयमें उतरके गोता मारेसूं ही शुद्धि होय हे. जलाशय नहीं होय तब तो केवल हरिस्मरणपूर्वक स्नान करेसूं शुद्धि होय हे एसो मालूम पडे हे. क्योंके अशुद्ध ही रहनो ये अनुचित हे. ओर प्रात:काल सूर्य उदयके अनन्तर फिर भी स्नान करे तब शुद्ध होय.

6. रात्रिमें जन्म-मरण वा रजोधर्म भयो होय ताको विचार

मिताक्षरामें कश्यप ऋषिको वचन हे के

1.सूर्योदयके पीछें अर्द्धरात्रपर्यन्त हर कोई समयमें स्त्रीकूं ऋतुधर्म भयो होय, अथवा काऊको जन्मभयो होय वा मरणभयो होय तो पहलो ही दिन माननो. म्लेच्छनकें जेसें रात्रि भए पे दूसरो दिनमाने हे तेसें नहीं माननो.

2.ओर रात्रिके तीन भाग करकें भी व्यवस्था करी हे. जेसें 30 घडी रात्रि होय तो 20 घडी पहले दिनमें गिननीं ओर 10 घडी बचीं सो दूसरे दिनमें माननी.

3.ओर एसो भी प्रमाण हे के रात्रिमें जन्म-मरण भयो होय वा ऋतुधर्म भयो होय तो जब तांई सूर्योदय न होय तब तांई पहले ही दिवस समझनो.

—इन पक्षनमें देशाचारसू व्यवस्था बांधनी योग्य हे. ‘शुद्धिमयूख’ ग्रन्थमें तो रात्रिको विभागपक्ष ही शिष्ट सम्मत हे एसें अधिक विचार कर्यो हे.

7. चतुर्थ दिवस प्रभृतिमें रजस्वलाकी शुद्धिको विचार

मिताक्षरामें स्मृत्यन्तरको वचन हे जो “चतुर्थ दिवस स्नान करेसूं रजस्वला शुद्ध होय हे. ओर देवपूजा श्राद्ध इत्यादि कर्मके योग्य पांचमे दिवसमें होय हे”. ओर “पञ्चम दिवसमें भी जो रजको संसर्ग होय तो वा दिन भी दैवपित्र्य कर्मके योग्य नहीं होय” एसो मनुस्मृतिमें वाक्य हे.

देव-पितृ कर्ममें तो बिलकुल रजसंसर्ग न होय तब ही जायवेको अधिकार हे ये ही मत योग्य हे. सो ही वृद्धमनुने कह्यो हे के “चोथे दिवस रजको संसर्ग होय तो स्नानसूं शुद्धि होय हे परन्तु देव-पितृ कर्मको तो अधिकार नहीं हे”. ओर परम्परासूं देव-पितृ कार्य करवेमें भी दोष नहीं हे. जेसें ‘अन्न’ संज्ञा जिनकी नहीं हे एसो सूखो चून-अनाज छूयवेमें

दोष नहीं हे. तेसें ही शाकपत्र सम्हारवेमें भी दोष नहीं हे. पर साक्षात् पाक करवेमें तो दोष हे. ओर पञ्चम प्रभृति दिवसमें भी कभी रसोई करती वेर जो साडीमे रजो दोष मालूम पडे तो वा साडीकूं बदलके, अङ्गकूं शुद्ध करकें, दूसरी साडी पहरकें रसोई करनी.

8. अटकाववारी शुद्धि भये पीछे फिरसूं अटकाव दीखे ताको विचार

अत्रिऋषिको एसो मत हे के “जो स्त्री एक बेर ऋतुधर्मसूं होय ओर वाकूं सत्रें दिनके भीतर फिर ऋतुधर्म मालूम पडे तो अशुद्धि नहीं माननी, अठारमें दिन जो मालूम पडे तो एक दिन अशुद्धि माननी, उन्नीसमें दिन जो मालूम पडे तो दो दिन अशुद्धि माननी ओर फिर बीसमें दिनसूं पूर्ण अटकाव माननो”. ओर जहां स्मृत्यन्तरमें एसो वाक्य हे के चौदमें दिवसके पहले अशुद्धि नहीं हे तहां एसो समझनोके चोथे दिवससूं लेकें चौदमें दिन बताए हें. अटकावके तीन दिन जो वामें जोडेंगे तो सत्रह दिन ही होय जांयगे तासूं परस्पर विरोध कछू नहीं हे. अब ये जो सत्रह दिन ताईं फिर अटकाव दीखे तो न माननो ये बात वहां समझनी के जहां जाकूं बीस दिनके पहलें अटकाव आवतोई न होय. परन्तु जाकूं अठारे दिनके पहलें बहोत करकें अटकाव आवे ताकूं तो अठारे दिनके पहलें भी तीन दिनको पूरो ही अटकाव लगे हे, एसें मिताक्षरामें विज्ञानेश्वरने निर्णय करो हे. ओर जाकूं एक दिन ही अटकाव दीखके फिर न दीखे तब भी तीन दिनको ही माननो चहिये. एसो कश्यप तथा वशिष्ट ऋषिको वचन हे. ओर जाकूं अटकाव भएकी खबर नहीं पडे ओर पहरे भए वस्त्रमें दाग मालूम पडे तो घरमें जो-जो काम करे होय वे सब अशुद्ध होंय ओर तीन दिनकी अशुद्धि लगे हे एसो प्रजापतिको मत हे. ओर ‘तत्त्वप्रकाशिका’ ग्रन्थमें तथा ‘धर्मप्रवृत्ति’ ग्रन्थमें ज्ञान होय तबसुं अशुद्धि होय एसो लिख्यो हे. यमस्मृतिमें भी एसें लिख्यो हे के

“व्यसन (विपत्ति)सूं, काम करवेसूं, निद्रासूं जो अटकावकी खबर न पडे तो पहलें जो पदार्थ छूए होंय वे कोई पदार्थ अशुद्ध नहि होंय हें. जाने पीछें जो-जो घरके पदार्थको स्पर्श करे तो जो-जो पदार्थ छूए उनकी शुद्धि करनी चहिये. जो माटीके पात्र छूए होंय तो उनकूं फेंक देने तथा उनमें जो घृत होय ताकूं तायलें तथा काष्ठके पात्रनकूं तथा मेष-महिषादिके शृङ्गनकूं तथा हाथी इत्यादिके दातनके पात्रनकूं छिलवाय लेनो. कांसेके पात्रनकूं सोबेर भस्म (राख)सूं मांजने. घरकूं गोबर माटी जलसूं लीपनो. धान्यकी शुद्धि प्रोक्षणसूं करनी. जाने-अजाने कोई भी पाप मिल गए होंय तथा ओर भी कोई अशुभ घरमें मिलो होय तो पुण्याहवाचन ब्राह्मणकी आज्ञासूं करनो चहिये. ओर अटकावको ज्ञान भयो होय तब पालनो तथा सन्देह मालूम पडे तो भी पालनो, स्नान करनो”

—इत्यादि सब विचार ‘तत्वप्रकाशिका-धर्मप्रवृत्ति’ में लिख्यो हे. जो इनके मतमें तो अटकावको ज्ञान होय तबसूं ही पालनो एसें सिद्ध होय हे. ओर ‘स्मृत्यर्थसार’ ग्रन्थमें एसें लिख्यो हे के पहलें अटकाव नहीं मालूम पड्यो होय पर जब मासपूर्तिके पीछें

चार दिवसके भीतर मालूम पड्यो होय तब भी स्राव भयो होय तबको अनुमान करके स्राव जबसूं भयो होय तबसूं ही माननो, ज्ञान भलेंई पीछे भयो होय. ओर जन्म-मरणमें तो जब सुनी होय तबसूं अशुद्धि होय हे. तासूं जो कोई पापकी बात हे वो जबसूं बनी होय तबसूं ही वाको दोष हे, खबर भलेंई पीछे पडो. एसें ही अटकावमें खबर भलेंई पीछें पडो पर जबसूं वो भयो होय वाके अनुमानसूं ही अशुद्धि होय हे, एसें स्मृत्यर्थसार कर्त्ताको मत हे.

सबको सार ये हे के जा स्त्रीकूं अटकावको महिना पूरो भयो होय ओर चार दिनके भीतर दूसरे-तीसरे दिन जो प्रत्यक्ष स्राव मालूम पड्यो होय तो पहलेसू ही स्रावको अनुमान करकें अशुद्धि माननी. ओर पांचमें दिवस जो स्रावको ज्ञान होय तो स्नानसूं शुद्धि होय हे. ओर महिनासूं चढकें जो ऋतुधर्मसूं होय ओर प्रत्यक्ष वाही समय जिनकूं स्राव मालूम पडे हे उनकूं तो वा समयसूं ही त्रिरात्र अशुद्धि समझनो.

ओर जा स्त्रीकूं अटकाव भयो ओर खबर वा समयमें न पडी होय ताकी छुई भई वस्तुनकी शुद्धिको ये प्रकार हे के जो साक्षात् वाने वस्त्र छूए हें विनकूं तो धोनो ही चहिये. साक्षात् नही छुए हें विनकूं गोमूत्र तथा सुवर्णके जलसूं "अपवित्र: पवित्रो वा" इत्यादि मन्त्र पढकें छींटा दे के ग्रहण करनो. ओर जा घरमें बहोत स्त्री रहती होय तहां जा स्त्रीकूं मेले कपडा होय उनमें रजोदोष नहीं मालूम पडतो होय तो भी अपने अटकाव होय वे ही अटकर लगायकें दिन गिनके पूर्वोक्त शुद्धि करनी. ओर जाकूं दिन गिनवेकी अटकर भी नहीं आवे तब तो पुण्याहवाचन करनो, भगवत्स्मरणपूर्वक सर्व स्पृष्ट वस्तुनकों प्रोक्षण करनो, क्योंके वा सिवाय ओर शुद्धि कहा करी जाय! ओर सन्धित(संधाना) ओर पर्पट(पापड) इन दोनोंकी तो 'अन्न'संज्ञा हे तासूं त्याग ही करनो चहिये.

9. रजस्वला अपवित्रको स्पर्श करे तथा अन्य रजस्वलाको स्पर्श करे ताको विचार

अपरार्कमें या विषयक बहोतसे वाक्य लिखे हें, पर उनको सार यहां कह्यो जाय हे. रजस्वला तथा सूतिका(स्वावडवारी) जो चाण्डालसूं छूय जाय तो त्रिरात्र उपवास करनो. ओर चाण्डाल-श्वपच (कुत्ताके मांसकूं खायवेवारो) इन दोनोनमेंसूं कोई भी रजस्वलाकूं छूए तो त्रिरात्र उपवास तथा पञ्चगव्य खानो चहिये एसें शातातपको मत हे. ओर कश्यपने शुद्धि भएपे चोथे दिन व्रत तथा पञ्चगव्याशन ओर बकरीसूं रजस्वलाकूं सूंघावनो चहिये एसें कह्यो हे. बृहस्पतिने एसें कह्यो हे के पतित (महापातकी) तथा श्वपच ये रजस्वलाकूं पहले दिन छूएं तो तीन दिन उपवास. दूसरे दिन छूए तो दो उपवास. तीसरे दिन छूए तो एक उपवास करनो चहिये. चोथे दिन छूएं तो चार प्रहरको उपोषण करनो, पर सब ये उपवास शुद्ध भएपे ही करने ओर ये न बने तो स्पर्श भएपे जब तांई स्नान नहीं करे तब तांईं उपोषण करे, स्नान करे पीछें तो कालसूं शुद्धि होय हे एसें शातातपऋषिने कह्यो हे. ओर ये भी न बने तो अहोरात्र उपवास करनो, पञ्चगव्य प्राशन करनो, सुवर्णदान ब्राह्मणभोजन करावनो.

ओर रजस्वला सगोत्र दूसरी रजस्वलाको स्पर्श करे तो स्नान करनो. समान गोत्रवारी न होय पर एक जातिकी रजस्वलाके स्पर्शमें स्नान करनो. क्षत्रियाकूं ब्राह्मणी छूए तो त्रिरात्र उपवास करनो. वैश्याकूं छूए तो पञ्चरात्र उपवास करे. शूद्राकूं छूए तो अर्द्धरात्रि उपवास करे, एसें वृद्धवसिष्ठने कह्यो हे.

मूत्रादि त्यागसमयमें रजस्वला कोई भी स्त्रीकूं मूत्रादि त्याग करती भईकूं छूए तो अहोरात्र उपवास करनो.

कुत्ता, जम्बूक(स्यारिआ), गधा इत्यादिको रजस्वलाकूं स्पर्श भयो होय तो चार प्रहर उपवास करनो, स्नान करनो, पञ्चगव्य खानो. इत्यादि अपरार्कमें बहोत बात कही हें.

10. रजस्वलाके स्नानादिकको विचार

रजस्वलाकूं चोथे दिन माथेकी चिकनाई-मेल निकासकें मलिन वस्त्रनकूं शुद्ध करवायकें स्नान करनो. दन्तधावन करनो तथा 60 बेर मृत्तिका लगायकें मलशुद्धि करनी. गोबर-जलसूं भी शरीरकी शुद्धि करनी. सचैल स्नान जलाशयमें करनो, घरमें नहीं करनो एसो पराशरको वचन हे. अत्रि ऋषिने कह्यो हे के रजस्वला चतुर्थ दिवस दन्तधावन करके 60 बेर मृत्तिका मलस्थानमें लगायके, सूर्योदय पीछे स्नान जलाशयमें करे. गोबर, माटी, भस्म इनसूं यथायोग्य मल दूर करे. स्नान करे पीछें उत्तम वस्त्र पहरकें गन्ध-पुष्पनसूं भूषित होयके सूर्यकी पूजा करे. ओर “इन्द्र! दत्तवर(गर्भाधान द्यो)” एसें अपने पतिकी इन्द्रभावसूं प्रार्थना करे. ऋतुस्नात स्त्री जाकूं स्नेहपूर्वक देखे तेसीही वाके सन्तान होय तासूं पतिकूं ही प्रथम देखे.

स्मृत्यर्थसारमें तो प्रात:काल स्नान करनो इतनो ही कह्यो हे, घरमें वा जलाशयमें सो विचार नहीं करो हे. साठ बेर मृत्तिका ब्राह्मणीकूं लगावनी, क्षत्रियाकूं 45 बेर, वैश्याकूं 34 बेर, शूद्राकूं 26 बेर ओर विधवाकूं द्विगुण मृत्तिका लगावनी. ओर ग्रन्थनमें तो चतुर्थ दिवस स्नानमात्र लिख्यो हे वाको प्रकार देश-काल नहीं बतायो हे. शिष्टाचार एसो भी हे जो पूर्वोक्त प्रकारसूं सूर्योदयोत्तर घरमें भी स्नान करनो. व्यासस्मृतिमें कह्यो हे सूर्योदयोत्तर सचैल स्नान करके पतिमुख देखके शुद्धि होय हे. देश-कालकी व्यवस्था सदाचारसूं तथा धर्मशास्त्रसूं समझनी. तलाव सर्वत्र तो होय ही नही हें, तासूं घरमें स्नान करनो भी योग्य हे. ओर देशकाल ये जो शास्त्रमें बताए हें सो असहायतामें समझनो. अकेली स्त्री होय तो अत्यन्त शुद्धपूर्वक घरमें नहीं स्नान कर सके हे तथा सलज्ज तरुण स्त्री तलाव पे जायकें भी या दुष्ट कलियुगमें नहीं स्नान कर सके. तासूं घरमें स्नान करो होय तो गीली भूमि तथा रजस्वलाके रहवेको स्थान लेपादिसूं शुद्ध करनो. ओर पहले यमस्मृतिको वचन कह आये ता

रीतिसूं गृहशुद्धि करनी. रजस्वलाके छुए जलकूं फेंकनो. क्योंकि देवल ऋषिने कह्यो हे के अक्षुब्ध जलाशय तथा बहते जलकूं रजस्वलादि छूए तो वे जल नहीं छूएं पर अपने घरके भरे जल छूए होंय तो वे अपवित्र होंय हें. तलाव, नदी, प्रभृतिमें भी जा घाटपे चाण्डालादिको संसर्ग तथा मलसंसर्ग होय वा घाटको त्याग करनो कह्यो हे तो घरके भरे जल तो रजस्वलाके स्पर्शमें त्याग करनो ही चहिये. गुर्जरदेशमें रजस्वलाकी छूई गीली भूमिको शोधन नहीं करे हें तथा जलको भी त्याग नहीं करे हें ये अनाचार ही हे. ओर मध्यदेशमें सारस्वतब्राह्मणनकी स्त्री तथा क्षत्रियादिकनकी स्त्री तीसरे दिन स्नान करे हें ये भी अनाचार हे. एसे ही शवको जिनने स्पर्श करो होय उनकूं भी अपने माथे और वस्त्रादिक की शुद्धि करनी चहिये. शवस्पृष्ट वस्त्रनकूं मृत्तिका लगायके धोने. ओर शवस्पर्शीकूं अपने अङ्गमें भस्म लगायकें स्नान करनो चहिये एसें स्मृत्यन्तरमें कह्यो हे ओर वैसो सदाचार भी हे. ओर उनके छूए जलकूं फेंक देनो.

अब रजस्वलादिक यदि अत्यन्त मांदी होय तो उनके स्नानको प्रकार यम, पराशर, उशना ऋषिनने बतायो हे. ज्वरके मारें आकुल जो रजस्वला स्त्री हे वाकूं दूसरी स्त्री छूय-छूयके सचैल स्नान करे तो रजस्वला स्त्रीकी शुद्धी होय. पर दश बेर अथवा 12 बेर ऐसें करेसूं तथा आचमन करेसूं शुद्धि होय हे. अन्तमें कपडा फेंक देने चहियें. एसे ही आतुरमात्र(रोगीमात्र) में समझनो. कछू दान भी करनो तथा पुण्याहवाचन करनो चहिये.

रजस्वला अवस्थामें ग्रहण आवे तो ग्रहणनिमित्त स्नान करवेमें दोष नहीं हे. निर्णयसिन्धुमें कह्यो हे "ग्रहणमें होम-जप करवेमें दोष नहीं हे". रजस्वलाकूं भी तीर्थमेंसूं जल निकासकें स्नान करानो चहिये एसें भार्गवार्चनदीपिकामें सूर्योदयनिबन्ध वाक्य हे. पराशर ऋषिको भी वचन हे के रजस्वलाकूं ग्रहणमें स्नान करनो चहिये. तीन दिनके भीतर ये ग्रहणको स्नान करके फिर जो-जो धर्म रजस्वलाके धर्मशास्त्रमें बताए हें वे सब पालने चहियें. एसें ही ओरनकूं भी राहुग्रस्त चन्द्रादिकको मोक्ष समयमें जब उदय होय तब वा ग्रहणकूं देखकें स्नान करनो. ओर स्नान करवे लायक अवकाश नहीं होय तो मार्जन करके दान करनो तथा मुक्तिस्नान करनो चहिये.

बालकादिकनकूं रजस्वलाको स्पर्श भयो होय तो शुद्धिमयूखमें हरिहरभाष्यस्थ वृद्धशातातपको वचन लिखो हे के अन्नप्राशन न भयो होय एसे बालकको रजस्वलाको स्पर्श होयवेपे प्रोक्षण करनो. ओर मुंडन न भयो होय तब ताईं आचमन करावनो. ता पीछे तो स्नान ही चहिये. रजस्वलादिको देखो भयो अन्न भी अशुद्ध होय हे एसें शाततपने कह्यो हे ओर वाकी शुद्धि एसें बताई हे के जीवहिंसक, महापातकी, स्वावडवारी, रजस्वला, नास्तिक इनने जा अन्नकूं देखो होय वाको प्रोक्षण करनो, वामेसूं कछु निकास डारनो फिर खानो अथवा वा अन्नमें भस्म लगानी. अथवा जरती लकडीको वाकूं स्पर्श करानो अथवा चांदीको वा सोनेको स्पर्श करानो अथवा बकराकूं सुंघानो फिर खानो चहिये.

11. अन्य स्नानके निमित्तनको विचार

"दु:स्वप्नदीखो होय, ऋतुकालमें मैथुन करो होय अथवा अष्टमी, चौदस दिवसमें मैथुन करो होय, उलटी करी होय, दस्त लगे होंय, हजामत कराई होय, चिताको स्पर्श करो होय, पूय(राध) स्पर्श करो होय तो, श्मशानमें जानो भयो होय तो, गीलो अस्थिको स्पर्श करो होय तो स्नान करनो"

—एसो पराशर वाक्य हे. ऋतुकाल सिवाय मैथुनमें तो हस्त-पादके प्रक्षालनसूं तथा कुल्ला करेसूं शुद्धि होय हे एसो बृहस्पति वाक्य हे. ओर अष्टम्यादिकमें मैथुन करे तो सचैल स्नान करे ओर वारुणी ऋचासूं मार्जन करे एसें मिताक्षरा-अपरार्कमें स्मृत्यन्तर हे. ओर मर्यादासिन्धुमें तो भोजन समयमें उलटी करी होय अथवा भोजन करके उलटी करी होय तो स्नान नहीं करनो एसें आपस्तम्बने कह्यो हे. ओर शोक करे पे, अश्रुपात होयवे पे स्नान करनो कह्यो हे. गोविन्दराजने कह्यो हे के दश बेर जो दस्त जाय तो स्नान करनो. ओर मेधातिथिने ये कह्यो के 1हरीतकी(हर्र) इत्यादि खाई होय, 2रोगादिकसूं दस्त आठसूं जादें भए होंय तब स्नान करनो. 3उलटी ओर दस्त दोनोंई भए होंय तो स्नान करनो —एसें तीन मत अधिक बताए हें.

पूय(राध)के स्पर्शमें स्नान जो पहलें बतायो तहां निष्कारण, वैद्य सिवाय, जो कोई स्पर्श करे ताकूं समझनो एसें लिङ्गपुराणमें वाक्य हे. अस्थि स्पर्शमें तो मनुस्मृतिमें विशेष कह्यो हे के मांस-मज्जा लगोभयो गीलो अस्थि ब्राह्मण छूए तो स्नान करनो चहिये. ओर सूखो छूए तो आचमन करनो, गायको स्पर्श करनो, सूर्यदर्शन करनो. ओर जानके सूखे भी हाडकूं छूए तो स्नानपूर्वक गायको स्पर्श करे, सूर्यदर्शन करे, हरिस्मरण करे तब शुद्धि होय. ओर अजीर्णके नाशमें सूर्योदयपर्यन्त निद्रा करी होय, उल्टी करी होय, दु:खप्न दीखो होय, दुर्जन स्पर्श करो होय तो स्नान करनो. अजीर्णके मिटे पे जो यहां स्नान बतायो हे सो देवपूजनादिमें अधिकार होयवेके ताईं समझनो एसे मर्यादासिन्धुमें यम वाक्यको विवेचन कर्योहे. उदय-अस्तमय कालमें वीर्यपात करो होय तो तथा अक्षिस्पन्दन (आंख फरकनी)मे, कर्णाक्रोशनमें, चिताके चढवेमें, राधके छूयवेमें सचैल स्नान करके 'पुनर्मन:' या ऋचाको जप करनो, सात आहुति घृतकी महाव्याहृतिसूं अग्निमें होम करे तब शुद्ध होय एसो कश्यपको वाक्य हे. ओरनमें होम नहीं कह्यो हे.

चिता, चिताको काष्ठ, राध, चाण्डाल, देवलक (तीन बरसताईं द्रव्यको लोभसूं देवकी पूजा करवेवारो) इनके स्पर्शमें सचैल स्नान करनो एसें स्मृत्यन्तरमें वचन हे.

मिताक्षरामें ब्रह्माण्डपुराणको वचन हे के (वेदबहिष्कृत)शैव-पाशुपत, लोकायत(चार्वाक मत वारो), नास्तिक, कुत्सित कर्म करवेवारो ब्राह्मण, शूद्र, बौद्ध इनके स्पर्शमें स्नान करनो. नग्न, पशुपत, काल, कौल, दिशश्चर इनकूं छूयकें सूर्यदर्शन करे, स्नान करे एसें स्मृत्यन्तर वचन हे.

बौद्ध, पाशुपत, जैन, लोकायतिक, कापिल (कपिलके मतकूं मानये वारो), विकर्म ब्राह्मण, शूद्र इनके स्पर्शमें स्नान करनो एसें मर्यादासिन्धुमें हारीतको वचन हे. ओर कापालिककूं छूए तो स्नान करे पीछें प्राणायाम भी करनो.

यहां जो नग्न-पाशुपत इत्यादि नाम गिनाए हें ये सब वेद बहिष्कृतनके अवान्तर भेदसूं जुदे-जुदे नाम समझनो. अपरार्कमें अङ्गिरा ऋषिको वचन हे के श्वपाककी छायामे भी यदि पांव धरो होय तो स्नान करकें घृतप्राशन करनो चहिये. ओर भी बहोतसे वहां गिनाए हें :

जो ब्राह्मण अपनो नित्यकर्म न करतो होय वाको एकपक्षके पीछे स्पर्श न करनो. ओर ज्ञातिबहिष्कृत, पुल्कस(चाण्डाल), म्लेच्छ, भील, पारसी, साविका स्त्री (दाई), कुत्तापालवेवारो, उन्मत्त, शूद्रकी जूठन, उच्छिष्ट शूद्र, कुत्ता, विष्ठा खायवेवारो सूवर, ऊंट, गधा, वृक(स्यारिआ), गोमायु(फ्यावरी), बन्दर, काक, मुर्गा, गीध, घुघ्घू इनके स्पर्शमें तथा भास(भिरगुदा-लहटोरा), काक, बन्दर, विकाव, गधा, ऊंट, कुत्ता, सूहर इनके विष्ठाके स्पर्शमें तथा श्मशानको वृक्ष, नीली(लील), नीलीकी बनी चीज, चाण्डालच्छाया, पतितकी छाया, शिवनिर्माल्य, शास्त्रमें भक्ष्य कहे हें उन सिवाय पञ्चनखपशु, शववसा(मांसको एक भेद), विष्ठा, आर्त्तव(अटकावको लोही), मूत्र, वीर्य, मज्जा, रुधिर —इनके स्पर्शमें सचैल स्नान करनो.

यहां वसाविष्ठा इत्यादिक कहे हें सो दूसरेके होंय विनके स्पर्शमें स्नान हे. यहां जितने पक्षीनके स्पर्शमें स्नान बतायो हे उन सिवाय पक्षीनकें पंख हवासूं उडकें अपने अङ्गपे लगें तो आचमन ही करनो. ओर पूर्वोक्तनके स्पर्श करे भएनको स्पर्श करो होय तो आचमन ही करनो. सदाचारचन्द्रोदयमें मयूरकी विष्ठा भी अपवित्र बताई हें. मर्यादासिन्धुमें या विषयमें विशेष बात भी कही हे :

रजक(रङ्गरेज), चमार, व्याध(अहेडिया), जालोपजीवी(माछीमार), धोबी, नट, शैलूष(नाटक करवेवारो), मुखेभग(मुखयोनि), कुत्ता, चारों वर्णनसूं व्यभिचार करवेवारी स्त्री, चक्री(कुह्मार), ध्वजी(तैलयन्त्रकर्त्ता), वध्यघाती(फांसीदेवेवारो), ग्रामके मुर्गा, सूहर इनको जा अङ्गमें स्पर्श भयो होय वा अङ्गकूं धोय डारनो आचमन करनो ओर कटिके ऊपरको अङ्ग छूयो होय तो स्नान ही करनो. ओर जूठन मोढे जो इनकूं छूए तो एक रात्र दुग्धपान करेसूं शुद्धि होय हे. ओर पूर्वोक्त जो जूठन मोढे होंय ओर जाको स्पर्श करें तो तीन दिन घी खायके ही रहनो तब शुद्धि होय हे एसो आपस्तम्बको मत हे.

पराशरने कह्यो हे के म्लेच्छ, आलून(कसाईको बिछोना) घरमें अथवा बाहर छूयो होय तो आचमन करनो, प्रोक्षण करनो. शंख ऋषिने कह्यो हे : उच्छिष्ट आदमीकूं छूए अथवा उच्छिष्ट पदार्थकूं छूए तो हाथ-पांव धोएसूं, आचमन करेसूं शुद्धि होय हे.

प्रक्षालन इत्यादिको जल पृथ्वीपे पडे तो वाके सूखे पीछे वा पृथ्वीके स्पर्शमें तथा अपवित्र पदार्थको जामें लेप होय ताके स्पर्शमें आचमनसूं हाथ-पांव धोयवेसूं शुद्धि

होय हे.

वर्षाऋतुमें गामके कूडेको, कीचको स्पर्श भयो होय तो माटीसूं छ(6) बेर पाव धोने तथा तीन बेर पिनडी धोनो आचमन करनो तब शुद्ध होय हे. स्नान करके, जल पीके छींके अथवा सोवे तो आचमन करनो. भोजन करके बजार जाय तो वहांसूं आयके आचमन करके वस्त्र दूसरो बदलकें फिर आचमन करनो चहिये इत्यादि स्मृत्यन्तरमें वाक्य हें.

पितृनको कार्य कछू भी करे होय तो आचमन करनो तथा अधोवायुके निकसवेमें, रोयवेमें, क्रोध करवेमें, छींकवेमें, मार्जार(बिलाव)-मूसाके स्पर्शमें, बहोत हंसवेमें, थूकवेमें, झूंठ बोलवेमें आचमन करनो एसें कृष्णभट्टीयमें वाक्य है.

12. जहां स्पर्शको दोष नहीं हे ताको विचार

मर्यादासिन्धुमें बृहस्पतिवचन हे : "तीर्थ, विवाह, यात्रा, सङ्ग्राम, देशोपद्रव, नगरदाह, ग्रामदाह इनके विषयमें स्पर्शदोष नहीं हे. अत्यन्त कोई आपत्ति पडी होय तामें, रोगमें, पीडामें, माता-पिता-गुरुकी आज्ञा भई होय तामें स्पर्शदोष नही हे".

शातातपने भी कह्यो हे के "गोकुल(गायनके समूह) में, कन्दुकशाला(गेंद खेलवेको स्थान)में, तेलके यन्त्रमें, इक्षुयन्त्रमें, स्त्रीनमें, राजकुलमें, रोगमें स्पर्शविचार नहीं करनो".

पृथ्वीचन्द्रोदयमें पराशरवाक्य हे के "विवाहमें, उत्सवमें, यज्ञमें, सङ्ग्राममें, भीडमें, भाजडमें, वनमें, ऊजडमें स्पर्शदोष नही हे". ये ही बात षड्विशन्मतमें भी कही हे.

स्मृत्यन्तरमें एसो वचन हे के "देवयात्रामें आए भये चाण्डाल-पतित इत्यादिनकूं भी देवमन्दिरके समीपमें छूयले तो स्नान नहीं करे. ओर उनके स्पर्शमें जो स्नान करे तो देवद्रोहको पातक लगे हे".

'स्पृष्टास्पृष्टि' या शब्दको अर्थ स्मृत्यर्थसारमें लिखो हे के 'स्पृष्ट' नाम छूयवेको हे ओर 'अस्पृष्टि' नाम देखवेको, सूंघवेको, सुनवेको हे. अर्थात् पूर्वोक्त चण्डालादिके स्पर्शमें उनके देखवेमें, उनके शब्दादि सुनवे इत्यादिमें दोष नहीं हे.

13. भगवत्सेवामे तथा देव-पितृकर्ममें कोनसूं अपवित्रता होय हे ओर फिर शुद्धि केसें होय ताको विचार

अब पहलें जिनके स्पर्शमें स्नान बतायो हे तामें तो कछू सन्देह ही नही हे पर पहले जिनके स्पर्शमें आचमन बतायो हे उनके स्पर्शमें भी स्नान ही उचित हे. क्योंके पहले जिनके स्पर्शमें आचमन बतायो उनमेसूं कितनेक पशु-पक्षी प्रभृतिके स्पर्शमें सदाचारचन्द्रोदयमें बृहस्पतिको वचन हे के "कुत्ता, काक, ऊंट, गधा, घूघ्घू, सूहर ग्रामके पक्षी, दीपक, सूप, शय्या, जोडा, बुहारी इत्यादिको स्नान करे पीछे स्पर्श करे तो फिर स्नान

करनो चहिये". या वचनमें जिनके स्पर्शमें पहलें आचमन बतायो हतो उनमेंसू ही कितनेक पशु-पक्षीके स्पर्शमें यहां स्नान कह्यो हे तो बाकी जो पशु-पक्षी रहे, जिनको पहले नाम बतायो हे, उनके स्पर्शमें भी तुल्यन्यायसूं स्नान ही करनो चहिये. तामें दृष्टान्त एक ये भी घटे हे जैसें यज्ञके प्रकरणमें अंजलीसूं सतुआ होमनो बतायो हे. वहां अंजलिको विकास उचिततासूं स्वत: प्राप्त हे तेसें ही एक पङ्क्तमें गिनके जिनको आचमन पहले बतायो हे उनमेंसूं थोडेनको नाम यहां लियो हे तोहू वा पङ्कितके सब ही समझनो उचित हे. ये स्नान जो बतायो हे सो भी नाभिके ऊपरके अङ्गकूं जो पूर्वोक्त पक्षी छूए ताहीमें समझनो. ओर जो नाभिमे नीचेको अङ्ग छूए तो वाकूं धोनो तब शुद्ध होय. दीपकादिक स्पर्शमें जो स्नान शास्त्रमें कह्यो हे सो लौकिक दीपकादि समझने एसो मेरो मत हे. स्मृत्यन्तरमें वाक्य हे के "बकरी, गधा और बुहारी सुं उडी भई धूल तथा खाट ओर दीवा की छायाके स्पर्शसूं पहले जन्मको कृत पुण्य भी नष्ट होय हे". ऐसे ही "सूपके पवन लगेसूं, नखाग्रके जलसूं, स्नानको जो पहरो भयो एकवस्त्र हे ताके आधे भागसूं ही शरीरपोंछ वेसूं, बुहारीकी रजसूं, केशके जलसूं पुरातन पुण्य भी नष्ट होय हे" एसें अत्रिस्मृतिमें कह्यो हे.

इन स्मृतिनमें जो निषेध हे वो लौकिक पदार्थको ही समझनो, अलौकिकके स्पर्शादिकमें तो पुण्य हे. तासूहीं दीपादिकको जब दान कियो जाय हे तब स्नान करवेको कह्यो नहीं हे. श्राद्धमें दीपदान करो जाय हे. कार्तिक-मार्गशीर्ष आदिक मासमें भगवान्के अगाडी धरे भए दीपककूं जो उकसाय दे तो भी वाको बडो फल हे. शूर्पमें सौभाग्यद्रव्य धरकें जब सुवासिनीकूं दीनो जाय हे तब शूर्पको स्पर्शकरोई जाय हे, ओर वाको देवेको बडो फल हे. तथा शय्यामें भगवान्कूं शयन करावें तब शय्याको स्पर्श करोई जाय हे. तथा भगवन्मन्दिरमार्जनकालमें बुहारीको स्पर्श होय हे. तथा गुरुपादुकापूजा शास्त्रमें कही हे. इन सब शास्त्रीय प्रकारनकूं देखते भये पूर्वोक्त निषेध लौकिक दीपादिकमें ही हे ऐसे समझनो, अलौकिकके स्पर्शादिकमें तो अतिपुण्य हे. यामें प्रमाण दानखण्डमें तथा सदाचारचन्द्रोदय, विष्णुभक्तिचन्द्रोदय, हरिवल्लभसुधोदय प्रभृतिमें देखनो. गुरुपादुकापूजन श्रीभागवतमें "त्वत्पादुके अविरतं परि ये चरन्ति" इत्यादि पद्यसूं कह्यो हे. ताहीसूं कृष्णावतारमें उद्धवजीकूं पादुकापधराई हे. तथा रामावतारमें श्रीभरतजीकूं पादुका पधराई हे. ओर जेसें भगवत्पादुका पूजा हे तैसे ही स्वगुरुपादुकापूजा करनी भी उचित हे क्योंके श्वेताश्वतर उपनिषद्में कह्यो हे के "जाकी भक्ति परम उत्कृष्ट भगवच्चरणमें हे तथा वेसी ही गुरुके चरणमें हे वा पुरुषकूं शास्त्रमें कहे भए सब फल मिले हे". या श्रुतिसूं ये सिद्ध हे के देववत् गुरुभक्ति करनी. तासूं गुरुपादुकापूजा करनी. तथा गुरुके जोडानको ऊर्ध्वाङ्गमें स्पर्श करनो भी योग्य हे. नृसिंहपुराणमें दूतन प्रति यमधर्मराजको वाक्य हे के "जो भगवान्के मन्दिरमें बुहारी दे तथा मन्दिरकूं गोबरसूं लीपे वाके तीन कुलनकूं तुम छोड दीजो". यहां बुहारी देवेको इतनो फल बतायो हे. ओर वो रज अतिपवित्र हे, तासूं बुहारी छूयवेमें तथा वाके उडे रजके स्पर्शमें जो दोष हे वो लौकिकको ही हे. ओर श्रीभागवतमें सम्मार्जन(बुहारी

देनो) उपलेपन(लीपनो) एसें दोनों जुदे-जुदे बताए हें. तासूं नृसिंहपुराणमें जो ‘सम्मार्जन’पद हे तासों अर्थान्तर भी नहीं होय सके हे. तासूं लौकिक दीपक-सम्मार्जनी-शय्याको ही पूर्वोक्त निषेध हे, अलौकिकनको तो स्पर्श पुण्यकारक हे.

स्नान करके कोरे जोडा पहरके घर आवे तो भी भगवत्सेवा करवेमें दोष नहीं हे क्योंके शास्त्रमें कह्यो हे के “स्नान करे पीछें तीर्थादिकमें नाभिके नीचेके अङ्गमें जोडाको स्पर्श होय तो भी स्नान न करनो”. तब तो तीर्थादिकमें स्नान करके जोडा पांवमें पहरके आनो तामें दोष कहा हो सके हे! ये सिद्ध होय हे.

ओर बिना जोडा पहरें मार्गमें अनेक मल-मूत्रादिकमें पांव पडे वा दोषसूं जोडाके स्पर्शमें दोष थोडो हे. ओर ब्राह्मणके पांव शुद्ध हें एसो वचन है तासूं घर आय के पांव धोएसूं शुद्धि होय हे. कोई तो एसो वचन भी पढे हें के “पादुका(खडाऊं) गमन समयमें पवित्र हें तथा जोडा ऊपरके भागमें पवित्र हें”. अर्थात् जोडाको स्पर्श पांवकूं होय हे वो भाग पवित्र हे. अब यदि ये वचन समूल हे तो जोडाके स्पर्शसूं अपवित्र नहीं होवे हें ये सिद्ध होय हे. पर स्नान करके जोडा पहरके घर आनो कह्यो तामें, जिनकूं पहरकें मलमूत्रादि न करो होय एसे जोडा होने चहिये ये सम्प्रदायमें शिष्टाचार हे.

यद्यपि मूत्रादित्याग समयमें जोडा पहरवेको स्मृत्यन्तरमें निषेध हे पर आजकल सर्वत्र मल-मूत्रत्यागमें जोडा पहरवेकी चाल हे तासूं जो नये जोडा होंय उनकूं ही पहरने. कलियुगमें शिष्टाचार ही स्मृतिसूं बलवान् हे तासूं टखनाके नीचे तकके ही जोडा पहरने चहिये.

एसे ही चर्मस्नेह(सरेस)सूं जा पेटीकूं जोडी हे वो सरेस ऊपर नहीं दीखतो होय तो वा पेटीकूं भी छूयवेमें, खायवेकी वस्तुविना, दोष नहीं हे. ओर जो खायवे-पीवेकी वस्तुमें एसो सम्बन्ध होय तो वा वस्तुको स्पर्श नहीं करनो. क्योंके यमको एसो वचन हे के जो जल चर्मको हे वो अपवित्र हे. तासूं सूखे चामके कोसमें जल पीवेकी वस्तु तासूं छूय गयो वाको स्पर्श नहीं करनो. एसें ही ओर भी जो कोई खायवेपीवेको वस्तुकूं अपवित्र स्पर्शमें अशुद्धता होय हे.

ओर भी अपवित्रताके हेतु देवलऋषिने बताये हें

“शरीरस्रोतकी जगेसूं मेल निकसे उनके स्पर्शमें अशुद्धि होय हे. अपरसमें तथा ओर समयमें कछू-कछू खायवेसूं, पीवेसूं, औषधके खायवेसूं अशुद्धि होय हे. कर्मकालमें खानपानसूं जादें अशुद्धि होय हे. एसें ही धरतीमें पडी भई उच्छिष्टके छूयवेमें तथा अमेध्य(अस्थि इत्यादि) के छूयवेमें अशुद्धि होय हे. सोएसूं, कपडा बदलवेसूं, रस्ता चलवेसूं, अशुद्धता होय हे. शोकयुक्त कठोर अश्लील वाक्य बोलवेसूं, असत्य वचनसूं, क्रूर वचनसूं अपवित्रता होय हे. अपने शरीरपे अपनो द्रप्सा (थूक-खखार) लगो होय तो वा अङ्गकूं माटी-गोबर-जलसूं शुद्ध करनो. अपवित्र पदार्थको लेप, स्नेह(चिकनाई) अथवा गन्ध होय, वाकूं जलादिकसूं शुद्ध करनो, आचमन करनो तब शुद्धि होय हे”.

पहले 12 तरहके मल बताए विनकी गणना अब बतामें हें :

1.वसा(हृदयकी मेदा) 2.शुक्र(वीर्य तथा अटकावको लोही)
3.असृक्(रुधिरादिक) 4.मज्जा
5.मूत्र 6.विष्ठा
7.कर्णमल(कानको मेल तथा ओर भी मोढेको मल)
8.नख 9.श्लेष्मा(खखार) 10.अश्रु(आंसू)
11.दूषिका(आंखको मेल गीड) 12.स्वेद(पसीना तथा ओर भी शरीरके मेल)

——ये बारहे मल हें.

यहां शास्त्रार्थसूं एसें सिद्ध होय हे के इन पूर्वोक्त 12 मलनमें दो भाग हें : 1.निष्पन्द(रिसाव) और 2.निःसरण(टपकनो-बहनो आदि). तामें वसा-शुक्र इत्यादि 6 मलको तनिक भी संसर्ग दीखे तब भी अधिक अशुद्धि हे. ओर श्लेष्मा इत्यादि जब बाहर टपककें गिरें तब विशेष अशुद्धि होय हे एसें समझनो. वसा प्रभृति 6 मल अधिक अशुद्ध हें ओर श्लेष्मा इत्यादि 6 मल कम अशुद्ध हें. तासूं ही बौधायनऋषिको एसो वचन हे के "वसाप्रभृति 6 मलकी जल तथा माटी सूं शुद्धि होय हे. तथा श्लेष्मा इत्यादि 6 मलकी शुद्धि जलमात्रसूं ही होय हे". ये भी सब शुद्धि स्वमलकी हे. दूसरेके मलके स्पर्शमें तो सचैल स्नान ही करनो सो पहले बतायो हे. मनुने तो बारहे मलनमें माटी-जल लेनो बतायो हे. पर वो देव-पितृकार्यमें समझनो एसें गोविन्दराजने व्याख्यान करो हे. मर्यादासिन्धुमें श्लेष्मादिमें भी माटी लेनी कही हे तासूं कर्मकालमें माटी लेनी, ओर समयमें न लेनी एसें दोनों व्याख्या युक्त हें.

अब जो पहलें अमेध्य पदार्थ बताए हें वहां 'अमेध्य'को ये अर्थ हे के स्वभावसूं ही अमेध्य(अशुद्ध) होय. स्वभावसूं अमेध्य कोन हें तिनके नाम देवलऋषिने बताए हें. यथा

"मनुष्यको अस्थि(हाड), मुर्दा, विष्ठा, वीर्य, मूत्र, अटकावको लोही, वसा, लोही, आंखको मेल, खखार, मज्जा इनको नाम 'अमेध्य' हे. इनके स्पर्शमें अशुद्धि होय हे".

या देवलके वाक्यमें तथा ओर ऋषिनके वाक्यमें कहूं भी स्त्रीके स्तनके दुग्धकी मलसञ्ज्ञा नहीं लिखी हे. तासूं अपरसमें भी वो टपक जाय तो स्नान नहीं करनो पडे हे. कदाचित् ये कोई कहे के स्मृतिमें लिख्यो हे के "ब्राह्मणादिक स्त्रीके स्तनको जो दूध पीलें तो पुन: संस्कार करनो कह्यो हे". तहां एसो समाधान हे के पीवेमें ही वाकी अशुद्धि बताई हे, पान सिवाय तो शुद्ध ही हे. ओर एसो अर्थ न ल्योगे तो स्मृतिमें एसें कह्यो हे के "दूसरेके हाथसूं खायवेकी चीज अपने हाथमें लेके फिर खाय तो गोमांसवत् हे. तथा हाथसूं हाथमें लीनो लोन-मृत्तिकाको भक्षण गोमांसवत् हे". तो इनको स्पर्श करे तो भी अत्यन्त अपवित्रता प्राप्त होयेगी! तासूं एसो अर्थ न लेनो, केवल भक्षणमें ही गोमांसवत् ये दृष्टान्त हे, स्पर्शमें दोष नहीं हे. तेसे हीं स्त्रीके दूध पीवेमें अशुद्धता हे परन्तु वाके स्पर्शमें दोष नहीं हे.

"प्रात:काल उठे पीछे स्नान करे तब देहकी शुद्धि होय हे. क्योंके या शरीरमें मुख-नासिका प्रभृति नव छिद्र हें. दिन-रात इन छिद्रनमेंसूं मल निकसे हे. सोए पीछे तो उत्तम-अधम सभी अंग एक ही अवस्थामें होय जायें हें. ओर सूवत समय लार-थूक निकसे ताकी खबर भी नहीं पडे हे. तासूं या देहकी शुद्धि प्रात:काल स्नान करवेसूं होय हे".

यहां प्रात:काल सोयकें उठे तब स्नान बतायो हे. पर जब सोवे तब ही अशुद्धि दोष हे एसें समझनो. बेठवे-उठवेके समय तो आचमन मात्रसूं शुद्धि होए हे. परन्तु वा बेर भी थूक-खखार शरीरपे पडे तो स्नान ही करनो चहिये. ये सब बात दक्षस्मृतिमें हे. वस्त्र बदलके दूसरो पहरो होय अथवा छींक आई होय, हुचकी लीनी होय तब आचमनसूं शुद्धि हे. क्योंके विनमें अल्प दोष हे. ताहीसूं सदाचारचन्द्रोदयमें पराशरवचन हे के

"छींक आई होय, थूक्यो होय, बेठें-बेठें निद्राको झोका आयो होय ता बखत, कपडा बदलवेके समय, अश्रुपात भयो होय ता पीछे कोई वैदिककर्म करनो होय तो भी आचमन ही करनो. आचमन न कर सके तो अपने दक्षिण कर्णको स्पर्श करले. अर्थात् श्रोत्राचमन करे".

क्योंके "गङ्गाजी दक्षिण कानमें रहे हें तथा नासिकामें अग्नि रहे हे. तासूं इनके स्पर्शसूं ही शुद्धि होय हे" एसो याज्ञवल्क्यको वाक्य हे. साक्षात् जलसूं आचमन न होय सके तो गोपृष्ठको स्पर्श करे. वो भी न होय तो सूर्यदर्शन करे. ये भी न होय तब दक्षिण कर्णको ही स्पर्श करे. ऐसें दक्षिण कर्णको स्पर्श तीसरी कोटिमें हे. मुख्य तो आचमन हे एसें मार्कण्डेयपुराणमें लिख्यो हे.ओर

"बोलवेमें जो बहोत महीन थूककी बूंद शरीरपे पडें तो अशुद्धि होय हे ओर वस्त्रादिपे पडें तो दोष नहीं हे" एसो गौतमऋषिको वचन हे.

"स्नान करे पीछें, जल पीए पीछें, छींक आए पे, बेठें-बेठें निद्राको झोका आवे तब, भोजन करे पीछें, बजारमें, गलीमें, डोलवेमें, वस्त्र पहरवेमें, पितृनके मन्त्रके उच्चारण करे पीछें, हृदयके स्पर्शमें, हृदयके देखवेमें, अधोवायुके निकसवेमें, बहोत हसवेमें, जूठ बोलवेमें, बिलावकूं छूयवेमें, मूसाके स्पर्शमें, आक्रोश करवेमें, क्रोध करवेमें तथा ओर भी निमित्तमें आचमन करनो चहिये"

एसे छन्दोगपरिशिष्टमें हे. ओर बेठें-बेठें निद्राके झोकामें लार टपक जाय तब तो स्नान ही चहिये.

भगवत्सेवामें तो अधोवायु निकसवेमें तथा असत्य बोलवेमें स्नान ही करनो चहिये. क्योंके अधोवायु निकसे हे सो प्राय: अजीर्णमें ही निकसे हे. ओर अजीर्ण होय तब स्नान करनो पहले कह्यो हे. ओर वाराहपुराणमें भगवान्को एसो वाक्य हे के

"मेरे अङ्गके स्पर्श करती बेर जो मनुष्य अधोवायु करे तो वाकूं नरकमें विष्ठासहित अधोवायु पान करायो जाय हे. फिर 5 बरस माखी होय हे, 7 बरस मूसा होय हे, 3 बरस कुत्ता होय हे, 9 बरस कच्छप होय हे".

अब पहलें जो बिलावके स्पर्शमें स्नान बतायो सो बिलावकूं जानकें छूयो होय तब समझनो. ओर बिलाव लगकें निकस गयो होय तब स्नान नहीं चहिये एसो यहां शास्त्रार्थ हे. अथवा कर्मकालमें वाकी पुच्छको स्पर्श करो होय तब समझनो. क्योंके अन्यथा “बिलाव, करछी, पवन ये सदा शुद्ध हैं” ये वचन व्यर्थ होय जाये. अथवा मार्जारस्पर्शकी शुद्धि भाण्डादि स्पर्शमें जाननी ओर साक्षात् शरीरको स्पर्श भयो होय तब स्नान करनो ऐसें दोनों वचनको विरोध मिटावनो. दाक्षिणात्यनके ग्रन्थनमें तो ऐसे हें के भोजन अथवा पूजादिक में जो बिलावकी पुच्छको स्पर्श होय तब स्नान करनो अन्यथा नहीं. तामें रत्नावली निबन्धस्थ स्मृतिवचन भी बतायो हे. एसे हीं बिना न्हाएको स्पर्श वस्त्रके अन्तरसूं कियो होय तो भी स्नान ही चहिये, क्योंके पहले कह आए हैं के वस्त्रादिकके अन्तरसूं जो स्पर्श हे वो साक्षात् ही गिनो जाय हे. ओर काष्ठादिकसूं अथवा लोई कम्बर रेशमी वस्त्रसूं स्पर्श करो होय तब स्नान नहीं हे. पर सदाचार हे तासूं आचमन करनो.

14. वस्त्रादिककी शुद्धिको विचार

अहत(सांचेको निकसो) वस्त्रकी शुद्धि प्रोक्षण करेसूं होय हे एसें अपरार्कमें वायुपुराणको वचन है. पृथ्वीचन्द्रोदयमें तो भृगु-सत्यतपस ऋषिको एसो वचन हे के अहत वस्त्र माङ्गलिक कर्ममें ही वितने ही समय प्रशस्त है. ओर पुलस्त्य, शातातप और कात्यायन ऋषिने अहतको एसो लक्षण कह्यो हे के

“ईषद्धौत(एक बेर धोबीको धुयो अथवा केवल जलसूं ही धोयो भयो), नव(शुक्र, रुधिर, उलटी, खखार, मूत्र, विष्ठा, चिकनाई, दुर्गन्ध, पुरातनता इन दोषन करकें रहित), श्वेत(सुपेद तथा ओर भी रङ्गको), सदश(जाके पल्लेपे जाली होय) इन चार वस्त्रनको नाम ‘अहत’ हे पर ये चारों बिना पहरे चहियें”.

सो ही सदाचारचन्द्रोदयमें कह्यो हे के “आठ हाथको नवीन, श्वेत, सदश ये वस्त्र सर्व कर्ममें पवित्र हे पर बिना पहरे चहिये”. श्रुतिमें भी एसें ही कह्यो हे के “आठ हाथको बिना पहरो वस्त्र पहरनो चहिये”. एसें ईषद्धौत, नव, श्वेत, अदश ये चार तरहके वस्त्रनको नाम ‘अहत’ हे. ओर चारोंई बिना पहरे चहियें एसें यहां अक्षरनके स्वारस्यसूं दीखे हे. यहां ‘श्वेत’ पदसूं उपलक्षणसूं रङ्गीन वस्त्रनको भी ग्रहण हे. क्योंके बृहत्पराशरऋषिको एसो वाक्य हे के “जो सर्व उपस्कर सहित शय्या हे सो तथा रङ्गे भए वस्त्र पुष्प ये तीनों चीज प्रोक्षणसूं ही शुद्ध होंय हें”. अब ये जो चार प्रकार अहत वस्त्रके बताए तिनको उपयोग जुदे-जुदे कार्यनमें होय हे जेसें ईषद्धौतको उपयोग यज्ञादिकमें. नवको उपयोग ओढवेमें. रङ्गीलको उपयोग कार्त्तिकमें राधादामोदरकी प्रीतिके ताईं स्त्री-पुरुषनकूं दान करे जाय हें तामें. सदशको उपयोग गुर्जर देशमें विवाहके समय कन्याके पहरवे इत्यादिमें होय हे. नव जो वस्त्र हे वो भी प्रक्षालन करे बिना भगवदुपयोगी नहीं होय हे क्योंके वाराहपुराणको एसो

भगवद्वचन हे के "नीलीको रङ्गो भयो वस्त्र तथा प्रोक्षण करे बिना नवीन वस्त्र जो कोई मोकूं समर्पण करे वो रौरव नरकमें पडे हे". तासूं या सबको सार ये हे के लीलके रङ्ग सिवाय मनुष्यके उपभोगमें न आए होय एसे चाहे जेसे रङ्गके निर्मल नवीन वस्त्रनको प्रोक्षण करकें भगवत्सेवामें स्पर्श करनो. एसें ही धुए जो वस्त्र हें उनकी भी प्रोक्षणसूं शुद्धि हे पर वे एक बेर पहरकें उतारे भए नहीं होने चहिये. ओर भगवदुपयोगी तो नवीन भी प्रक्षालन करे पीछे ही होय हे. मर्यादासिन्धुमें देवलने मेध्य(शुद्ध)के चार भेद माने हें : "शुचि, पूत, स्वयंशुद्ध और पवित्र ये चार भेद शुचिके ही नामान्तर समझने". क्योंके नवीनता निर्मलता तो चारोंमें हे. जितनो भेद हे परस्पर वो आगे दिखायो जायगो.

शुचि : 'शुचि'को अर्थ ये हे के जो उपभोगमें नहीं आयो एसो नवीन अथवा नवीन न होय पर निर्मल होय. सर्वधान्य (अनाज) वस्त्र, आभरण इनकूं शास्त्रमें शुचि कहवावे हे. पर इनमें कोई बुरी वस्तुको लेप नहीं होनो चहिये. तथा ये अत्यन्त अवर्ज्य (ग्राह्य) हें एसो ज्ञान होवे तब पूर्वोक्त पदार्थनकूं शुचि बताए हें.

पूत : अब दूसरो भेद मेध्यको पूत हे. ताको लक्षण ये हे के जो पहलें बताय आयेके धान्य वस्त्र आभरण इनको नाम शुचि हे विन धान्य वस्त्रादिकको प्रोक्षण वैदिक मन्त्रसूं कियो होय तब उनको 'शुचि' नाम न बोलनो परन्तु 'पूत' नाम बोलनो. प्रोक्षण उनको करो जाय तब वे पूर्वोक्त यज्ञके योग्य होंय हें अर्थात् वस्त्रादिक नवीन होय अथवा निर्मल होय तो उनकूं शुचि तो बोलने पर पूत नहीं बोलने पूत तो तब ही बोलने के जब उनको प्रोक्षणरूप संस्कार करो होय. ओर तब ही उनको यज्ञमें उपयोग होय हे.

स्वयंशुद्ध : मेध्यको तीसरो भेद स्वयंशुद्ध हे. स्वयंशुद्धको अर्थ ये हे के जाकी शुद्धि करनी न पडे, अपने आप ही, अपवित्रके स्पर्शमें भी पवन-सूर्यकिरणसूं शुद्ध होय. ताको उदाहरण :

"वसति(घर), चमस(यज्ञको पात्रविशेष; जासूं सोम पीओ जाय हे), यान(सवारी) वाहन(घोडा इत्यादि) साधन(तरवार इत्यादि) छुना, नौका, आसन(जाजम इत्यादि) पशु, रजस्वला भिन्न स्त्री, आकर(खान) क्रीत(खरीदी चीज तथा बेचवेकी चीज) अदृष्ट(बिना देखी चीज) वाकू प्रशस्त (बहोत जाकी प्रशंसा करी होय) इन सब पूर्वोक्त पदार्थनको नाम स्वयंशुद्ध हे".

पवित्र : अब मेध्य(शुद्ध)को चोथो भेद पवित्र हे. जो पदार्थ आप शुद्ध हे ओर दूसरे अशुद्धके सम्बन्धसूं दूषित न होय कें वा दूसरे अशुद्धकूं शुद्ध करे. तथा देव-पितृ कर्ममें जाको उपयोग होतो होय ताको नाम 'पवित्र' हे. उदाहरण ये हैं :

"बकरीको मुख, घोडाको मुख, गायनकी पीठ, पुष्पवारे वृक्ष, उत्तम ब्राह्मण, भस्म, सहेद, सुवर्ण, कुश, कुतप(दिनको अष्टमांश) तिल, अपामार्ग(ओंधा), शिरीष(सिरस), अर्क(आक), पद्म, आमलक(आमरे) मणि, पुष्प, सरसों, दूर्वा, भद्रा(रासना),

प्रियंगु(काङ्गनी), अक्षत, सिकता(रेती), लोह, हरिद्रा, चन्दन, यव, पलाश(खाखरा), खदिर(खेर), अश्वत्थ, तुलसी, घातकी(धवा), वट, पौष्टिक पदार्थ, मलघ्न, खारो इत्यादि तथा (हरीतक्यादिक) गोबर, माटी, जल शोधन (शुद्धि करवेवारे ओर भी पदार्थ) इन सबनको नाम 'पवित्र' हे. इनमें भी गोबर, माटी, जल ये तीन पदार्थ विशेष पवित्र हें".

अब ये जो मेध्य(शुद्ध)के चार भेद बताए तासूं पहलें जो कह आए के नवीन वस्त्र तथा बिना पहरे-ओढे निर्मल धौत वस्त्र, प्रोक्षण करकें शुद्ध होय हे उनके स्पर्शमें दोष नहीं हे ये बात सिद्ध भई हे. क्योंके पहलेई वे शुद्ध हें ओर फिर उनको शंखोदक इत्यादिसूं प्रोक्षण कर्यो तासूं उनकी 'पूत' संज्ञा भई तब उनकूं भगवत्सेवामें भी स्पर्शमें दोष नहीं. जो कोई कर्मठ(यज्ञादिक कर्म करवेवारे) आजकाल एसें कहे हें के धोबीने जो कपडा धोए उनकूं फिर धोयकें भी कर्मकालमें उपयोगमें न लेने क्योंके खार-साबुनसूं वे धुए हें तासूं अपवित्र हें, पर ये बात ठीक नहीं है. क्योंके यहां पहले पवित्र पदार्थनकी गिनतीमें जो 'मलघ्न' 'खारो' बतायो हे वो मलशोधनमें पवित्र हे. ओर तैत्तिरीय श्रुतिमें कह्यो हे के "जो दाक्षायण यज्ञ करतो होय वाकूं ही खारे इत्यादिसूं धुए भए कपडा फिर धोयकें भी नहीं पहरने" तासूं ओर कोई यज्ञादि कर्मनमें धुए भए वस्त्र शंखोदकादिकसूं प्रोक्षण करकें पहरवेमें चिन्ता नहीं हे. तासूं खारेके धुए भए कपडा दाक्षायण यज्ञमें ही न पहरने चहियें क्योंके श्रुतिमें कह्यो हे के "दाक्षायण यज्ञकर्त्ता असत्य न बोले, मांस न खाय, स्त्रीसङ्ग न करे, खारे इत्यादिसूं धुए वस्त्र न पहरे" एसें दाक्षायण यज्ञ करवेवारेकूं ही दोष बतायो हे ओरनकूं नहीं हे.

शुद्धि-अशुद्धिको प्रकार एकादशस्कन्ध भागवतमें भगवान्ने बतायो हे ओर श्रीधरजीने वाकी व्याख्या करी हे वामें बौधायन ऋषिको वाक्य भी या प्रसङ्गको हे सो सब यहां प्रसङ्गसूं दिखायो जाय हे. भगवद्वाक्यको अर्थ ऐसो है :

वस्त्र-पात्र प्रभृति पदार्थनकी शुद्धि जल इत्यादिसूं होय हे ओर अशुद्धि मूत्रादि स्पर्शसूं होय हे. ओर जहां अपनकूं ऐसो सन्देह होवे के ये पदार्थ शुद्ध हे के अशुद्ध हे तहां ब्राह्मणके वचनसूं शुद्धि-अशुद्धि समझनी.

पुष्पादिककी शुद्धि प्रोक्षणादि संस्कारसूं समझनी. पुष्पादिकी अशुद्धि सूघवेसूं होय हे.

कालसूं शुद्धि वरसातके जलकी होय हे. शास्त्रमें कह्यो हे "वर्षाऋतुमें तीन दिन पीछें वर्षाको जल उपयोगमें लेनो. ओर अन्य ऋतुमें दस दिन पीछे लेनो". अर्थात् वर्षाकालमें तीन दिन पीछे जल शुद्ध होय हे ओर अन्य समयमें दश दिन पीछे जल शुद्ध होय हे. ये कालसूं शुद्धिको उदाहरण हे.

अन्नादिक तुरत पाकादिसूं तैयार करो होय वो शुद्ध हे, पर्युषित(बासी) अशुद्ध हे.

पुत्र जन्मादिक दशाहके पीछें जाने होंय तो शुद्ध हें, पहलें अशुद्धि हें. एसें सबकी शुद्धि-अशुद्धि होय हे.

इन शुद्धि-अशुद्धिमें भी शक्ति-अशक्ति, महत्त्व, अल्पता, देश-काल इत्यादि सब विचार करनो. हिमालय इत्यादि देशमें स्नानके ठिकाने आचमनसूं ही शुद्धि करानी. शीतकालमें भी स्नानादि विचारकें बतानो. बहोत पदार्थ हे वाकी शुद्धि थोडेसूं होय हे. थोडो पदार्थ हे वो छूय जाय हे अथवा बहोत शुद्धिसूं शुद्ध होय हे. तैसे ही शक्ति-अशक्तिसूं शुद्धि-अशुद्धि होय हे. ग्रहण-सूतकमें अन्नादिककी अशुद्धि शक्त होय तो जाननी, नहीं तो अशक्तकूं दोष नहीं लगे. जीर्ण-मेलो वस्त्र धनवान् पहरे तो दोष हे, अशक्तकूं दोष नहीं हे. चन्दोवा-कनात नवीन बनायवेकी शक्ति न होय तो एसे स्थलमें दूसरे कोई शुद्धिको उपाय करनो. तलाव-नदी इत्यादिकनकूं चण्डालादिक स्पर्श करे तो भी अशुद्धता नहीं हे ओर थोडोसो जल होय तब चण्डालादि स्पर्शमें छूय जाय हे. एसें ही जो निर्भय देश हे तामें स्नानादिकसूं शुद्धि हे ओर जहां चोर-व्याघ्रादिकको भय हे तहां स्नान बिना भी शुद्धि हे. एसे ही तरुण अवस्था अथवा नीरोग अवस्थामें स्नानादिकसूं ही शुद्धि होय हे ओर वृद्धावस्था अथवा ज्वरादि रोग में स्नान बिना भी शुद्धि होय हे. एसें देश-काल इत्यादि विचारकें शुद्धि-अशुद्धि होय हे. ताहीसूं ब्रह्मपुराणमें तथा लिङ्गपुराणमें यद्यपि एसो वचन हे के "देव-पितृ कर्ममें नित्य धोयकें ही वस्त्र पहरनो". पर वर्षादि ऋतुमें नित्यको धुयो सूख नहीं सके तासूं वेसे कालमें नित्यको धुयो न होय तो पहले दिनको भी काम आय सके. पर प्रोक्षण तो करनो चहिये. ये ही प्रकार भगवत्सेवामें समझनो पहले दिनके धुए वस्त्रके पहरवेसूं जो दोष लगे वो भगवत्सेवासूं ही दूर होय हे.

धौत वस्त्रकूं काष्ठादिकसूं उठायकें लावे तो दोष नहीं हे. क्योंके यज्ञके प्रकरणमें लिख्यो हे के "यज्ञपशुके अन्वारम्भण(स्पर्श)में यजमानको मृत्यु होय हे ओर अनन्वारम्भण(स्पर्श न करनो)में यजमानकी स्वर्गलोंककी हानि होय हे" एसें यहां स्पर्श करवेमें तथा नहीं करवेमें भी दोष बतायो हे. फेरी वाको समाधान करो हे के वपाश्रपणीसूं वा पशुको भले स्पर्श करनो, वो स्पर्श भयो भी कहवावे है ओर नहीं भयो भी कहवावे है. एसे हीं काष्ठसूं स्पर्श करवेमें दोष नहीं हे.

कोई एक आचार्यनको तो एसो मत हे के "ऊनके वस्त्रमें, रेशमीव स्त्रमें, कारे मृगचर्ममें लिपटो भयो पदार्थ प्रोक्षणसूं ही शुद्ध होय हे" एसो वे वाक्य भी पढे हें. कदाचित् एसी शंका कोई करेके पहले प्रचेताको वचन एसो कह्यो हे के वस्त्रादिकके अन्तरसूं स्पर्शमें भी साक्षात्स्पर्श ही गिनो जाय हे! ताको समाधान ये हे के वो वचन चाण्डालादि स्पर्शमें हे.

अब जेसें पहले मेध्य(शुद्ध)के चार भेद बताए एसें ही अमेध्य(अशुद्ध)के भी चार भेद होवे हैं. यामें प्रमाण देवलऋषिको वाक्य हे : "दूषित, वर्जित, दुष्ट, कश्मल ये चार भेद अमेध्यके हें. ये चारों भेद दण्डादिक चिन्ह धारण करवे वारेनकूं विशेष करकें मानने चहियें".

दूषित : अमेध्यको पहलो भेद 'दूषित' हे. जो आप शुद्ध हे ओर दूसरे अशुद्धके संसर्गसूं अशुद्ध भयो होय वा पदार्थको नाम दूषित हे. जेसें धौतवस्त्र वासी वस्त्रसूं मिलजाय तो अशुद्ध होय हे याको नाम दूषित हे. याकी शुद्धि विधिपूर्वक प्रोक्षणसूं भी होय सके.

वर्जित : अमेध्यको दूसरो भेद 'वर्जित' हे. ताके उदाहरण अभक्ष्य, अभोज्य, अपेय पदार्थ जानने. तथा व्यङ्ग(जन्मसूं ही अङ्गहीन), पतित(महापातकी) चाण्डाल, गामको मुर्गा, गामको सूवर, कुत्ता, सव्रण(व्रण जाकें होय रह्यो हे), सूतकी(पिण्डरू वारो), सूती(स्वावड वारी), मत्त, उन्मत्त(बावरो), रजस्वला, मृताशौच वारो, अशुद्ध(चाण्डालादिकसूं छूय गयो होय वो) ये सब 'वर्जित' हें. अर्थात् इनको स्पर्श न करनो.

दुष्ट : अमेध्यको तीसरो भेद 'दुष्ट' हे. उदाहरण : स्वेद(पसीना), अश्रुबिन्दु, फेन, टूटो भयो नख-रोम, गीलो चर्म, लोही ये सब 'दुष्ट' हें.

कश्मल : अब चोथो भेद अमेध्यको 'कश्मल' हे. ताको उदाहरण : मनुष्यको अस्थि(हाड), वसा, विष्ठा, वीर्य, मूत्र, अटकावको लोही, शव, पूय(राध) ये सब 'कश्मल' हे.

——इन सबनके स्पर्शमें स्नान करनो चहिये. इनसूं वस्त्र छूय जाय तो धोनो. ओर वस्त्रकूं विष्ठा इत्यादि कश्मलको संसर्ग भयो होय तब तो त्याग ही करनो.

अब इन चारों अमेध्यनमें अस्नात(बिना न्हायो)की गिनती नहीं हे तासूं जो पूर्व कह आए के अस्नात मनुष्य काष्ठसूं धुले वस्त्रको स्पर्श करे तो-तो वस्त्र नहीं छूए ये बात सिद्ध होय हे. ओर 'आश्वलायन' स्मृतिमें तो एसें कह्यो हे के श्वेतवस्त्र होय वाकूं ही पहरनो तथा ओढनो अथवा श्वेत वस्त्र पहरनो ओर रेशमी वस्त्र ओढनो. ओर ब्राह्मण तो जेसो मिले वो ही ग्रहण करे. ऊनी वस्त्र तथा त्रसर(टसरी) इनकूं न पहरने चहियें. ओर ओढवेमें दोष नहीं हे. त्रसर(टसरी)कूं ओढके जो भोजन करे अथवा मलत्याग करे तो धोएसूं शुद्धि होय हे ओर रेशमी वस्त्र सदा शुद्ध हे. अङ्गिराऋषिको एसो मत हे के ऊनी वस्त्रकूं जो वीर्य, मुर्दा, मूत्र, विष्ठा, रजस्वला को स्पर्श होय तो भी अपवित्र नहीं होय हे. तासूं जो पहले कह आये के ऊनी, रेशमी, कारो मृगचर्म इनमें लिपटो वस्त्र धुयो भयो नहीं छूए हे ये सिद्ध होय हे. क्योंके मलादिकके स्पर्शमें ऊनी वस्त्र नहीं छूए तासूं वो बहोत पवित्र हे. तासूं ऊनी वस्त्र इत्यादिमें धुए भए कपडाकी लिपेटवेकी चाल हे सो सदाचार नहीं हे. वस्त्रमें जो मलमूत्र, रुधिर, वीर्य को सम्बन्ध भयो होय तो वा वस्त्रकूं साफ करकें धोनो. जो धोएसूं भी दाग नहीं मिटे तो वितनो फाड डारनो अथवा वितनो ही जराय देनो. एसे ही मद्यादिकके स्पर्शमें शुद्धि करनीं. यहां मल-मूत्रादि स्पर्शमें इतनी शुद्धि बताई हे तासूं उच्छिष्ट(जूठन)के स्पर्शमें तो वस्त्रकूं धोएसूं ही शुद्ध करनो. याज्ञवल्क्यस्मृतिमें कह्यो हे के ऊनी वस्त्रकूं तथा कौशिक(रेशमी) वस्त्रकूं गोमूत्र, जल, खारो इनसूं शुद्ध करानो. अंशुपट(वृक्षकी छाल इत्यादिके वस्त्र)कूं बेलपत्र, गोमूत्र, जलसूं शुद्ध करनो ओर कुतप(पहाडी बकराके रोमको कम्बर)की शुद्धि अरीठा, जल इत्यादिसूं होय हे. क्षौम(अलसीको बनो वस्त्र)की शुद्धि सुपेद सरसों जलादिकसूं होय हे. ये जो ऊनीकी शुद्धि याज्ञवल्क्यस्मृतिमें हे सो आज काल ये

चाल छूट गई हे. अथवा ऊनी वस्त्रादिकके धोयवे वारे कारीगर लोक एसें ही धोते होंयगे तासूं याज्ञवल्क्यने एसें कह्यो हे. क्योंके एकादशस्कन्धमें भागवतमें कह्यो हे के वस्त्र, पात्र इत्यादिमें जो अपवित्र दाग लगे होंय ओर वे जा चीजसूं साफ होते होंय वो ही वस्तु उनकी शोधक हे. तासूं कारीगर इत्यादि धोयकें दें तब ऊनी वस्त्रादिककी शुद्धि प्रोक्षणसूं ही करनी. अङ्गिराको एसो वचन भी हे के “बहोत रोमवारेनकी शुद्धि पवन, अग्नि, सूर्य, चन्द्रकी कान्तिसूं होय हे”. एसें ही रज्जु(रस्सी) इत्यादिकी शुद्धि भी समझनी. क्योंके व्यासजीको वचन हे के “जेसें जल इत्यादिसूं वस्त्रकी माटी शुद्धि होय हे तेसें ही रज्जु, वैदल(बांसके बनाए छवडा, टोकरा इत्यादि)की शुद्धि होय हे”. ओर जो रज्जु प्रभृति अत्यन्त मलसंसर्गवारी होंय तो बितनी ही काट करनी. एसें ही निवारकी शुद्धि समझनी. क्योंके निवार भी रस्सीको ही काम करे हे तासूं रज्जुवत् हे.

15.पात्रादि शुद्धिको विचार.

“सोना चांदी मोती शंख सीप पत्थर के पात्र, ऊर्ध्वपात्र(यज्ञके उलूखल इत्यादि), ग्रह(षोडशि प्रभृति यज्ञके उपयोगी), शाक, रज्जु(बरत) जासूं पत्थर इत्यादि बांधे जाय हें उठाए जाय हें सो, मूल(अदरक इत्यादि), फल, वस्त्र, विदल(बांस इत्यादि तथा बांसके बने छत्रपात्रादिक), चर्म (बकरा इत्यादिको चाम तथा चामके रस्सा इत्यादि), पात्र(पीतर तामेके), चमस(होतृचमस यज्ञके पात्रविशेष) इनकूं जो उच्छिष्टको स्पर्श भयो होय तो ओर कोई चीजको लेप लग्यो न होय तो धोएसूं शुद्धि होय हे. ओर उच्छिष्टको स्पर्श न होय तब धोयवेको भी काम नहीं हे”.

—एसें ‘सौवर्णराजत’ या ‘याज्ञवल्क्य’ की कारिकाके व्याख्यानमें विज्ञानेश्वरने लिख्यो हे. ये शुद्धि लौकिक-अलौकिक दोनो प्रसङ्गमें समान हे. क्योंके शाक इत्यादिनके भी बीचमें नाम गिनाए हें तासूं. इतनी बात ओर भी विशेष यहां समझनो के याज्ञवल्क्यने जो ये शुद्धि बताई हे सो ही रसोई इत्यादिके जो पात्र होंय, पहले दिनके मजे भए, उनकूं भी दूसरे दिन धोयके उपयोगमें लेने. क्योंके वे बासी हें. एसें ही शाक इत्यादि बासी होंय उनकूं भी धोने चाहिये. ओर अनाज इत्यादि जिन पात्रनमें होंय उनकूं तो प्रोक्षण ही करनो. धान्यादिके प्रोक्षणको विचार अगाडी आवेगो.

सलेप पात्रनकी शुद्धि कहे हें. “चरु(चरुस्थाली), स्रुक्, स्रुवा, सस्नेह पात्र(प्राशित्र हरणादि) इनकी उच्छिष्ट स्पर्शमें लेप रहितनकी शुद्धि ताते जलसूं होय हे” एसो विज्ञानेश्वरको मत हे. ओर हमकूं ऐसो मालूम पडे हे के उच्छिष्ट न होय तो भी चरु(भात)को लेप इनमें होय तासूं ताते जलसूं धोमनो. क्योंके ‘चरुस्रुक्’ या श्लोकमें ‘चरु’ ये पद प्रथम ही धरो हे. तासूं वे पात्र चरुके लेपवारे ही चहियें. दूसरो कारण ये हे के ताते जलसूं शुद्धि बताई हे तासूं भी उनमें चरुलेप सिद्ध होय हे. तासूं जो विज्ञानेश्वरको मत हे

के लेप रहितनकी उच्छिष्ट स्पर्शमें उष्ण जलसूं शुद्धि होय हे ये ही नहीं हे किन्तु उच्छिष्ट स्पर्श बिना भी चरु इत्यादिको लेप होय तासूं उष्ण जलसूं प्रक्षालन करनो चाहिये. मनुस्मृतिमें कह्यो हे के "सुवर्ण मोती सीप शंख को पात्र, अनुपस्कृत राजत पात्र ये यदि लेपरहित होंय तो इनकी जलसूं शुद्धि होय हे". या वाक्यमें लेपरहितनकी ही जलसूं शुद्धि बताई हे. तासूं जो लेप सहित होंय उनकी ही उष्णजलसूं शुद्धि होय हे ये पूर्वोक्त बात सिद्ध भई. अपरार्कमें भी एसेंई हे.

पूर्वोक्त मनुस्मृतिके वचनमें 'अनुपस्कृत राजत' एसें कह्यो हे ताको अर्थ ये हे के "चांदीको पात्र अनुपस्कृत होय वाकी शुद्धि जलसूं होय हे". 'अनुपस्कृत' पदको अर्थ विज्ञानेश्वरने एसो करो हे के "पृथ्वीमें डाठ्यो न होय एसो चांदीको पात्र". "अत्यन्त न छूयो होय एसो चांदीको पात्र" एसो अर्थ मेधातिथिने कर्योहे. "ताम्रको जामे मेल न होय एसो चांदीको पात्र" एसो अर्थ अपरार्कने करो हे. "चित्रामन, रेखा इत्यादि जामें न होय एसो चान्दीको पात्र" एसो अर्थ 'मर्यादासिन्धु'में लिख्यो हे. ये ही अर्थ युक्त हे क्योंके जामें चित्रामन, गढेला इत्यादि होंय वाको लेप केवल जलसूं नहीं जाय सके तासूं. ये ही बात निर्णयामृतमें कही हे. ओर "जिन पात्रनमें बहोत लेप होय उन तैजस पात्रनकी, मणिनकी, पत्थरके पात्रनकी शुद्धि भस्म, माटी, जलसूं करनी" एसें मनुस्मृतिमें लिख्यो हे. यहां तैजसपात्रको अर्थ धातुके पात्र हे. एसो वाक्य हे के "सोनो, चांदी, ताम्र, कांस्य, लोह्यो, त्रपु(राङ्ग), सीसक(सीसो) इन सबनको नाम 'तैजस' हे". या वाक्यमें कांस्यको नाम हे तासूं पीतरको भी बोध होय सके हे.

क्योंके ब्रह्माण्डपुराणमें पीतरकूं भी तैजस बतायो हे. ओर कांसेको तथा पीतरको नाम सङ्ग लीनो हे तासूं यद्यपि यहां कांस्यको ही नाम लीनो हे पर लक्षणासूं वाको सङ्गी पीतर भी लेनो. ओर जसत तो राङ्ग अथवा सीसम को भेद हे तासूं वो भी तैजस कह्यो जाय है.

अब पूर्वोक्त मनुके "भस्मनाद्भिर्मृदा चैव" वाक्यमें भस्म, जल, माटी इन तीननको नाम हे. तासूं तहां जल तो अवश्य ही लेनो ओर माटी ओर भस्ममें विकल्प हे. अर्थात् माटी लेनी अथवा भस्म लेनी एसें विज्ञानेश्वरने तथा मर्यादासिन्धुकारने अर्थ करो हे. ओर मोकूं यहां एसो मालूम पडे हे के तामें पीतरके जरे भए पात्रनकूं तो माटीसूं शुद्ध करने साफ करकें नएसे करनो. तथा कांसेके पात्रनकी कारोंच भस्मसूं मिटावनो एसें माटी ओर भस्म इन दोनोनको उपयोग जुदे-जुदे पात्रनमें माननो तासूं विज्ञानेश्वरने तथा मर्यादासिन्धुमें जो कह्यो हे चाहे माटीलेनो चाहे भस्म लेनो सो ठीक नहीं हे. ताहीसूं ब्रह्मवैवर्तपुराणमें वैष्णव ब्राह्मण धर्मके कहवेके प्रकरणमें श्रीनन्दरायजी प्रति भगवद्वाक्य हे के "नित्य नवीन पात्रनसूं रसोई करनी अथवा पन्द्रे दिन तांई उन ही पात्रनसूं रसोई करनी फिर उनकुं फेक देने. ओर नित्य पाकस्थानकुं लीपनो शुद्धि करनो". यहां नित्य नवीन पात्रनसूं रसोई करनो कह्यो हे. अब माटीके पात्र तो नित्य फेंक दिये जांय पर पीतरके

बासन केसें फेंके जांय? ओर भगवान्को वाक्य तो एसो हे के नित्य नवीन पात्रनसूं रसोई करनी. तासूं पीतरके बासननकूं माटीसूं खरोंच दूर करके साफ करनो तथा कांसेकेनकूं भस्मसूं साफ करनो. क्योंकि नित्यनवीन करवेकी शक्ति नहीं हे. ओर मनुमें माटीसूं तथा भस्मसूं शुद्धि बताई हे तासूं रसोईके पात्रनकूं साफ करनो तब वे नित्यनवीनसे ही होय जांयगे तासूं भगवद्वाक्य विरोध भी न होयगो. ये ही शुद्धि निर्लेप ताम्रादिकके पात्र होय तथा थोडे लेपवारे होंय बहोत लेपवारे होंय उनमें भी तथा उच्छिष्ट पुरुषके स्पर्शमें भी जाननी. ये बात सर्वसम्मत हे.

उच्छिष्टके दो भेद हें :

1.ऊर्ध्वोच्छिष्ट तथा

2.अधोच्छिष्ट.

तहां ऊर्ध्वोच्छिष्ट पुरुषके स्पर्शमें ये पहलें शुद्धि बताय आए. ऊर्ध्वोच्छिष्ट पुरुषको जूठन अङ्ग इत्यादि जो पात्रके लगे तो मृत्तिकासूं वा पात्रको शोधन करनो इतनो विशेष हे. नहीं तो केवल जलसूं. एसें ही अधोच्छिष्ट पुरुषको हाथ जा पात्रसूं लगे वा पात्रकूं माटीसूं मांजनो. ओर पात्रको अधोच्छिष्ट अङ्गसूं ही स्पर्श होय तब तो अमेध्यलिप्त शुद्धि जो आगें कहेंगे सो करनी एसें मोकूं दीखे हे.

चर्मके पात्रनमें कछु विशेषता हे सो स्मृतिसारमें बताई हे.

"चामके सूपकी शुद्धि गोमूत्रसूं तथा जलसूं करनी. चामकी कुप्पीनकी शुद्धि धूप देयवेसूं होय हे. ओर जो चर्म हें उनकी शुद्धि गोमूत्रसूं तथा सुपेद सरसोंसूं होय हे. कोई ऋषिको एसो भी मत हे के चर्मकी शुद्धि तीन दिन तांई भस्म-मृत्तिका-जलसूं करनो, फिर तीन दिन तांई त्रिफलासूं करनो, फिर तीन दिन तांई कषायसूं करनो तब शुद्धि होय हे". "भस्म दो टका भर लेनी, माटी चार टका भर लेनी, 6 टका भर त्रिफला लेनीं ओर 6 टका भर ही कषाय लेनो. 'कषाय'नाम आम जामुन आमरे पाकर पीपर गूलर बड को हे.

16. जूठन पात्रनकी शुद्धि

शंख ऋषिको एसो मत हे के "ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के जूठन पात्र मांजेसूं शुद्ध होय हें ओर शूद्रके जूठन पात्रनकूं 4 बेर मांजके फिर अग्निसूं तपायकें धुंए हाथसूं उठायके गायके सींगको स्पर्शकरावनो तब शुद्ध होंय हें". ये शुद्धि कांसेकी नहीं समझनी. कासेंकी तो विशेष शुद्धि बताई जायगी.

दांतके तथा सींगके पात्रनकी शुद्धि कडवी खरसूं करनी. फलपात्र(तूम्बा इत्यादि) की शुद्धि गायकी पूंछसूं करनीं. सीप-शंखके पात्रनकी शुद्धि कडवी खरसूं होय हे. ये शुद्धि थोडे संसर्गमें समझनी. विशेष संसर्गमें तो सींगके पात्रनकूं छीलनो ही वायुपुराणमें कह्यो हे एसें 'मर्यादासिन्धु'में कह्यो हे.

अग्निसूं तथा जलसूं चांदी सोनेकी उत्पत्ति हे तासूं अग्नि-जलसूं ही उनकी शुद्धि करनो अत्युत्तम हे ये ही बात श्रुतिमें भी लिखी हे. "ताम्र, लोह, कांस्य, पीतर, राङ्ग, सीसो इनकी लोन खटाई जलसूं शुद्धि यथायोग्य करनो". हारीतने कह्यो हे के

"सोने, शंख, शुक्ति(सीप) की शुद्धि जलसूं होय हे. ओर उनमें गन्ध आवती होय अथवा दाग लगो होय, चिकनाईसूं मेलापन होय तो जो, गेहूं, मटर, उईमसूर, मूङ्ग इनके चूनसूं तथा गोबरसूं शुद्धि होय हे. ताम्रपात्रनकी शुद्धि लोनखटाईसूं होय हे. कासेंके पात्रनकी शुद्धि भस्मसूं होय हे. उस्तरा, छुरी इनकी शुद्धि घिसवेसूं अथवा तेल लगायवेसूं होय है. पथ्थरेके पात्रनकी भी शुद्धि रेतीके घिसवेसूं होय हे. मणिमयपात्रनकी सुनारके सोने इत्यादि धिसवेके पथ्थरपे घिसवेसूं शुद्धि होय हे. काठके पात्रनकूं छीलके शुद्ध करनो. माटीकेनकूं फिर अवामें पकावनो तब शुद्धि होय हे. बांसके टोकरा इत्यादिनकी शुद्धि गोमूत्र गोबरसूं होय हे. तूम्बी, कमण्डलु इत्यादिनकी शुद्धि गीली गायकी पूछसूं होय हे. जल तो सर्वत्र लगे हे".

पराशर, शातातप, आपस्तम्बने कांसेकी शुद्धि एसे बताई हे के कांस्य पात्र शूद्रके जूठन होंय अथवा गायके सूंघे भए होंय अथवा कुत्ता कौआके जूठन होंय तो दस बेर मांजवेसूं शुद्ध होय हें. ओर शंख ऋषिको एसो मत हे के जो कांसेको पात्र स्वावडवारीको जूठन होय अथवा मदिरा इत्यादिको लेपवारो होय तो इक्कीस बेर मांजनो. ओर पीतर इत्यादिको वासन जो एसो होय तो तपावनो तथा गेहूं इत्यादि जो सात पदार्थ पहलें कह आए उनसूं 21 बेर मांजनो. कांसेकूं तपावनो नहीं एसें अपरार्कको मत हे. ओर निर्णयामृतमें 'सूतिकोच्छिष्ट' या शंखवचनको एसो अर्थ लगायो हे के कोई भी पात्र स्वावडवारीके संसर्गके होंय अथवा मद्यके संसर्गके होंय उनकूं 21 बेर मांजनो तब शुद्धि होय हे. तपायवेकी जरूरत भी नहीं हे. जो गेहूं प्रभृति जो सात पदार्थ पहलें बताय आए उनमेंसूं एकेक पदार्थसूं सात-सात बेर मांजनो 21(49?) बेर समझनो. ओर कांसेकूं तो तपावनो तथा मांजनो तब शुद्धि होय हे.

इन दोनों व्याख्यामें अपरार्कको मत ही युक्त हे. क्योंके स्मृत्यन्तरमें मद्यादिकके संसर्गमें तपानो बतायो हे एसो अपरार्कमत हे. निर्णयामृतकारको ये मत हे के मद्यादिकके संसर्गमें तपावनो बतायो हे उच्छिष्ट तो वासूं कम अशुद्ध हे. तासूं शूद्रोच्छिष्टमें कासेकूं ही तपावनो पीतर इत्यादिकूं केवल मांजनो. आदित्यपुराणमें लिख्यो हे के कांसे, लोहे, तांबे, पीतर, राङ्ग और सीसे के पात्र लेपरहित होंय वे तो इकेले जलसूं शुद्ध होंय हें ओर शूद्रोच्छिष्ट पात्र होंय उनकूं लोन-खटाई-जलसूं चार बेर वा दश बेर एकेक पदार्थसूं जुदे-जुदे मांजनो. ओर मर्यादासिन्धुमें ब्रह्माण्डपुराणको वचन लिखो हे के "स्वावडवारी, मुर्दा, विष्ठा, मूत्र, रजस्वला इनको छूयो जो पात्र होय वाकूं लोन खटाई जल इत्यादिसूं पूर्वोक्त शुद्धि करके अग्निमें जितने तापसूं गले नहीं इतनो तपावनो".

सबको सार ये हे के

1.त्रिवर्णमेसूं कोईको भी उच्छिष्ट पात्र मंजो भयो होय, लेप कछू न होय वाकी प्रोक्षण करेसूं शुद्धि होय हे.
2.जूठन मोढे कोई माटीके पात्रकूं छूय ले तो वाकी प्रोक्षणसूं शुद्धि होय हे.
3.ओर जो कछू चिकनाई इत्यादिको वामें दाग लग रह्यो होय तो अग्निमें तपावनो. क्योंके बृहत्पराशरको वचन एसो हे के "निर्लेप माटीको 1 पात्र अथवा बहोतसे पात्र होंय उनकी प्रोक्षणसूं शुद्धि होय हे. ओर लेपवारेनकी खूब तपायवेसूं होय हे. जूठन हाथसूं ही छूये अथवा उच्छिष्ट लग गयो होय तो खूब तपावेसूं होय हे". "जूठन हाथसूं ही छूये होंय अथवा उच्छिष्ट लग गयो होय तो खूब तपाने जासूं कि जूठनको संसर्ग रूप-रस-गन्ध इत्यादि सब दूर हो जाय" एसें बौधायनको वचन हे.
4.ओर काष्ठके जो पात्र हें उनकूं जूठन मोढे छूए होंय तो दोष नहीं हे. अथवा प्रोक्षण करनो. ओर जूठन हाथसूं छूए होंय तो छीलनो. जूठन मोढे दूसरे हाथसूं भी छूए होंय पर वे पात्र लेपयुक्त होंय तो भी छीलनो. क्योंके पहलें याज्ञवल्क्यको एसो वाक्य हे तासूं.
5.बांसके पात्र तथा पंखा इत्यादिकी प्रक्षालनसूं शुद्धि होय हे. ओर जूठनको संसर्ग लग रह्यो होय तो गोमूत्र, गोबर, बिल्वफलसूं घिसकें धोएसूं शुद्धि करनी. एसे ही चर्मपात्र (झाबा इत्यादि)की शुद्धि वस्त्रवत् समझनी. अथवा अगाडी प्रकार बतावेंगे ता रीतिसूं समझनो.

काचपात्रनकी तथा कागजके पात्रनकी शुद्धि कहूं भी कोई ग्रन्थकारनने बताई नहीं हे. पर विष्णुधर्मोत्तरमें दूसरे काण्डमें द्रव्यशुद्धिके अध्यायमें काचपात्रनकी शुद्धि बताई हे के काचपात्रकी शुद्धि जलसूं करनो. कागजके पात्रनकी शुद्धि तो वहां भी नहीं कही हे पर यहां विचार कियो जाय हे.

चीनीके पात्रनकी शुद्धिविचार कहूं भी नहीं हे पर उनकी शुद्धि यहां लिखे हें. चीनीके पात्रनकी कोई लोक तो काचसूं उत्पत्ति बतावे हें, कोई माटीसूं बतावें हें, कोई कोडीसूं बतावे हें. यदि कोडीसूं बने होंय तो अब्जमें गिनती हे. तो पहलें कह आए ता प्रकारसूं थोडे संसर्गमें तो प्रक्षालनसूं ही शुद्धि करनो. ओर मध्यम संसर्ग अथवा वासूं भी बढती भयो होय तो त्याग करनो. क्योंके बहोत संसर्गमें अस्थिके पदार्थनको छीलनो बतायो हे सो तो चीनीमें होय नहीं सके तासूं त्याग ही करनो. ओर जो माटीके अथवा काचके मानें तो जलसूं तथा तपायवेसूं करनो. बहोत अशुद्धि भई होय तो बढती अग्निको दाह लगावनो, जासूं वे फूट नहीं जांय एसो अग्निको ताप लगावनो. परन्तु शिष्ट लोक तो चीनीके पात्र नहीं स्वीकार करे हें. क्योंके उनकी उत्पत्ति खराब रीतिसूं होय हे. उत्पत्तिको प्रकार वैद्यकको ग्रन्थ रावणकृत अर्कप्रकाशमें लिख्यो हे के

"शिलाजीत जहां पेदा होतो होय वहां एक गढेला खोदनो, वामें पशुके तथा मनुष्यके पुराने हाड डारने, तामें सज्जीखार, महाखार, खारो, लोन अनेक तरहके पटकनो.

गन्धकको तातो जल डारनो. नानाप्रकारके मूत्रडारने. फिर 6 महिना तांई पथ्थरकी माटी डारनो. फिर कंकपक्षीको हाड डारनो. फिर खूब आंचसूं वाकूं जरावनो. फिर तीन बरस पीछे वो सब इकट्टो पथ्थरसो बन जाय हे वाकूं निकासकें सबको चूरा करके अनेक पात्रनकूं बनावनो".

एसें चीनीके पात्रनकी उत्पत्ति बहोत खराब रीतिसूं लिखी हें.

कागजके पात्रनकूं प्रोक्षणसूं, धोयवेसूं, सुखायवेसूं यथायोग्य करनी एसें मोकूं मालुम पडे हे. क्योंके कागज सनके बने हें. ओर की शुद्धि रेशमी वस्त्रकेसी मिताक्षरामें लिखी हे.

ओर भी जो अतैजस पात्र (तामे पीतर इत्यादि धातुसूं भिन्न्) हें उनकी शुद्धि पूर्वोक्त याज्ञवल्क्य, हारीत प्रभृति ऋषिके वाक्यनसूं जाननी.

कांस्य भिन्न तैजसपात्रकूं जूठन मोढे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनमेसूं कोई भी बिना जूठनके अङ्गसूं छूय लेतो दोष नहीं हे. ओर जूठन हाथसूं छूए तो एक बेर मांजेसूं शुद्धि हे.

त्रिवर्णकी रजस्वला तथा सूतिका के छूये पात्रकी 21 बेर माजेसूं शुद्धि होय हे. ओर रजस्वलाके जूठन होंय तो खूब तपावनो ओर इक्कीस बेर मांजनो.

ओर जूठन मोढे शूद्र छूए तो धोवनो. ओर शूद्रको जूठन पात्र होय तो चार बेर मांजके फिर खूब तपायके गोशृङ्गको स्पर्श करावनो तब शुद्धि होय हे.

पात्रकूं गाय सूंघजाय तो भी एसे ही शुद्धि करनी.

कांसेके पात्रकूं त्रिवर्ण जूठन मोढे छूएं तो धोवनो. ओर जूठन मोढे छूएं तो एक बेर मांजनो.

शूद्रको जूठन कांस्यपात्र दस बेर खारेसूं मांजनो तथा खूब तपावनो. ये ही शुद्धि गायके सूंघवेमें हूं करनीं.

शूद्रकी स्त्री तथा स्वावडवारीको जो उच्छिष्ट कांस्यपात्र हे वाकूं त्याग करनो.

कांसेके पात्रमें कुल्ला करे होय वा पांव धोए होय तो 6 महिना तांई पृथ्वीमें डाटनो फिर निकासकें खरसानपे ऊजरो करनो. एसे हीं पीतरके पात्रमें कुल्ला करे होंय तो वाकी हू शुद्धि करनो एसो मालूम पडे हें क्योंके या श्लोकमें कांस्यपद हे से पीतरके ग्रहणकरवेकी सूचना भी करे हे.

17. अमेध्यस्पृष्ट पात्रकी शुद्धिको विचार

देवलऋषिने इनकूं अमेध्य कहे हें : "मनुष्यको अस्थि, मुर्दा, विष्ठा, वीर्य, मूत्र, अटकावको लोही, वसा, मेदा, अश्रु, आंखको मेल, थूक-खखार तथा मद्य". यहां मुर्दा कह्यो

हे सो पशुसूं लेके मूसा-छापकी पर्यन्त सबको ही समझनो. छापकीसूं अगाडी तो कीडानमें क्षुद्र जन्तुनकी गिनती हे. विष्ठा-मूत्र बिलावपर्यन्तकी समझनी. क्योंकें मूसाकी मुसलेंडी अन्नमें पडी दीखे तो वितने ही ग्रासकूं उठायकें फेंक देनो कह्यो हे तासूं वाकेमें दोष नहीं हे. 'मद्य' शब्द करकें तो बारहे प्रकारके लेने. उनके 12 प्रकार ये हें : 1.पनस(कटेर) 2.दाख 3.मधूक(मुरेठी) 4.खिजूर 5.ताल 6.ईख 7.मधु(दोडी) 8.सैर 9.अरीठा 10.मेरेय(मिराओषधि) 11.नरियलकी सुरा तथा 12.सुरा. इन बारहेनमें सुरा बहोत अधम हे.

पीतर, तांबे इत्यादिके बासननकूं मूत्र, विष्ठा, वीर्यादि अमेध्यको अत्यन्त संसर्ग भयो होय तो गलानो चहिये. थोडो संसर्ग भयो होय तो खरसानपे चडामने, स्पर्शमात्र भयो होय तो भस्मसूं 21 बेर मांजनो तथा जो-गेहूं इत्यादिसूं भी मांजनो एसें अपरार्कमें तथा निर्णयामृतमें लिखो हे. ओर काठके, चामके, कागदके पात्र इत्यादिनको तो त्याग ही करनो. ओर शातातप ऋषिको एसो मत हे के "सुवर्ण, रजत, ताम्र, राङ्ग, कारो लोह्यो, पीतर, सीसो, सुपेद लोह्यो इनकूं खूब पत्थरसूं घिसने तब शुद्धि होय हे". स्मृत्यन्तरमें भी कह्यो हे के

"मद्यको जामें लेप न होय एसे कांस्यकी शुद्धि भस्मसूं होय हे. ओर जामें मद्य, विष्ठा, मूत्रको संसर्ग होय वाकूं तपायेसूं तथा खरसानपे छिलाएसूं शुद्धि होय हे. ओर ताम्रकी शुद्धि खटाईसूं होय हे. मांसके संसर्गवारे ताम्रकी खूब तापाएसूं खरसानपे छिलाएसूं होय हे. ताम्रकी शुद्धि खटाईसूं होय हे. मांसके संसर्गवारे ताम्रकी खूब तपाएसूं खरसानपे चढायेसूं होय हे. ताम्र-पीतर इत्यादिके पात्रनकूं मूत्र-विष्ठादि संसर्गमें माजनो-तपामनो, अधिक संसर्गमें गलानो".

ये ही मत बौधायनको तथा विष्णुको भी हे. एसें ही चाण्डाल, स्वावडवारी, रजस्वला, पतित इत्यादिके अधिक संसर्गमें गलानो, थोडे संसर्गमें तपानो ओर 21 बेर भस्मादिकसूं मांजनो.

निर्णयामृतमें या विषयकी एसी व्यवस्था बांधी हे के पूर्वोक्त मलमूत्रादिको संसर्ग ताम्र, पित्तल इत्यादिके पात्रनकूं भयो होय तो सात दिना तांई गौमूत्रमें राखने. एसें करेसूं भी वाको लेप इत्यादि संसर्ग दूर न होय तो गलायकें नए बनानो ये बात भी युक्त हे. एसें ही बिलाव, छापकी इत्यादिके मूत्रादिको संसर्ग पात्रनकूं भयो होय तो शुद्धि करनी. थोडे संसर्गमें तपानो बहोतमें गलानो.

झीङ्गुर इत्यादि छोटे जीव शाक इत्यादिमें रंध गए होंय तो वाकूं पटकके वा पात्रकूं तपानो. ओर मूसा, छापकी इत्यादि रंध गए होंय तो वा पात्रकूं खरसानपे छिलवानो. मछली, जोख इत्यादि मरकें गिरें तो भी या ही प्रकारसों शुद्धि करनीं. जा पात्रमें रंधो होय वासूं जा पात्रको स्पर्श भयो होय वाकी भी एसी ही शुद्धि करनी. भोजनके पात्रमें वाको अल्प स्पर्श भयो होय तो मांजनो. साक्षात् स्पर्श भयो होय तो अधिक मांजनो.

दही-दूध तांबेके पात्रमें मद्यके समान होय जाय हें, कांसेंके पात्रमें शहद मद्य समान हे. अदरकमें जुड मिलो होय तो मद्य सम हे. अब जो ये मद्य समान हें सो जा पात्रमें

धरे होंय वा पात्रकी शुद्धि माजवेसूं ही होय हे ओर कोई वाकी शुद्धि नहीं हे. "होमके समय, दोहके समय, पाक करवेमें, परिवेषणमें, स्नान-दान-तर्पणमें ताम्रपात्रमें दही-दूध धरवेमें दोष नहीं हे" एसो सदाचारचन्द्रोदयमें षट्त्रिंशन्मतको वाक्य लिखो हे.

एसे ही दीयासूं छूए पात्रनकी शुद्धि मांजवेसूं होय हे. गायके सूंघे पात्रनकी शुद्धि 10 बेर मांजवेसूं होय हे एसें पराशरादिऋषिके वाक्य पहलें लिख आए हें. शंखऋषिने कह्यो हे के कारे पक्षीके मुखसूं छूए भए पात्रनकूं खरसानपे धरकें छीलने. ओर पशुनके मुखसूं छूए पात्रनको उपयोग नहीं करनो. यहां मुखके छुएनकी अशुद्धि इतनी बताई हे तासूं मुख सिवाय ओर अङ्गको स्पर्श भयो होय तो मांजवेसूं शुद्धि होय हे. पशुमें भी बिलाव पवित्र हे क्योंके बिलाव, कडछी, पवन ये सदा शुद्ध हें एसो मिताक्षरामें वचन लिखो हे. ये ही बात योग्य हे.

ओर जहां बहोतसे पात्र इकठ्ठे धरे होंय वहां तो जाकूं मलादिको स्पर्श होय वो ही छूए हें ओरनकूं अशुद्धता नहीं हे एसें अपरार्कमें हारीत ऋषिको वचन हे. शंखऋषिको भी ये ही मत हे. ये जो शोधनप्रकार हे सो पहलें कह आये जो हारीतऋषिने "अद्भिः काञ्चनशंखशुक्तीनाम्" इत्यादि करकें जो शुद्धिविभाग बतायो हे ताही प्रमाण समझनो.

ओर जिनकी शुद्धि स्पष्ट शब्दनमें शास्त्रमें नहीं दीखे हे ऊनकी शुद्धि शातातपने एसे बताई हे के जो पदार्थ अशुद्ध वस्तुके स्पर्शसूं अपवित्र भयो होय वो ही अपवित्र समझनो वासूं दूसरो लग्यो होय तो वो नहीं छूए. ये ही शुद्धि प्रकार सर्व वस्तुमें समझनो.

बौधायनऋषिको एसो मत हे के काष्ठके पात्रनकूं उच्छिष्टको संसर्ग भयो होय तो शस्त्रादिकसूं घिसकें शुद्धि करनीं. ओर उच्छिष्टको लेप लगो होय तो छीलने. ओर मलमूत्रादिस्पर्श भयो होय तो त्याग करनो. मर्यादासिन्धुमें तो एसे कह्यो हे के चाण्डाल, शव, विष्ठा इनको थोडो संसर्ग भयो होय तो भी खरसानपे चढायकें घिसवेसूं शुद्धि होय हे. कोईक ग्रन्थकारनने एसो कह्यो हे के विष्ठाको संसर्ग भयो होय तो वा पात्रकूं खरसानपे इतनो छिलवानो जासूं वाको गन्धलेप सब दूर होय ता पीछे वाकूं लेनो. शव आदिके स्पर्शमें माटी-जलसूं प्रक्षालन करनो. आसन, चोकी, पटा इत्यादिकूं कुत्ता छूय जाय तो धोने चहियें. ओर रसोईके उपयोगी पात्रनकूं पूर्वोक्त स्पर्श होय तो त्याग ही करनो एसें मालुम पडे हे. ओर सींगके पात्र तथा दांतके पात्रकी भी एसें ही शुद्धि करनो. "मणिमय पात्र, पथ्थरके पात्र, शंख-शुक्ति प्रभृतिकूं मूत्रादिस्पर्श भयो होय तो सात दिन पृथिवीमें गाडने तब शुद्धि होय हे" एसें विष्णुवचन हे. ओर दांतके, सींगके, शंखके, सीपके, मणीके, पात्रनकूं उच्छिष्ट स्पर्श भयो होय तो विनकी रेतीसूं घिसवेसूं शुद्धि होय हे एसें अपरार्कमें कश्यपको वाक्य हे. बांसके, बेंतके, नड(तृणविशेष)के, निचुल(स्थलवेतस)के वस्त्र इत्यादिनकी शुद्धि भी काष्ठवत् ही समझनीं. बांसकी अथवा बेंतकी पिटारी होय कपडा धरवेकी तो वाकूं धोनो तब शुद्धि होय हे क्योंके जो भोजनके उपयोगी होय वाकी अधिक शुद्धि करनीं. ओर एसे पात्रमें अशुद्ध गन्ध-लेप छुडायकें धोयवेसूं ही शुद्धि होय हे. ओर बांस इत्यादिकको पक्वान्न

धरवेको पात्र होय वाकूं तो त्याग ही करनो. माटीके पात्रनकी जो पहलें शुद्धि बताई के उनकूं फिर अग्निमें पकायलेने तब शुद्धि होय हे सो ये शुद्धि भी कुत्ता इत्यादिके स्पर्शमें ही समझनो. ओर "मद्य, मूत्र, विष्ठा, थूक, खखार, राध, लोही, अश्रु इत्यादिकको स्पर्श माटीके पात्रकूं भयो होय तो त्याग करनो" एसें मनुस्मृतिमें लिखो हे. मर्यादासिन्धुमें मनुस्मृतिके श्लोकको पाठभेद हे पर अर्थभावसूं एक ही आवे हे.

चाण्डालादिके स्पर्शमें बहोत धान्य तथा वस्त्र होय तो ताकी प्रक्षालनसूं शुद्धि हे. ओर माटीके पात्रनको तो त्याग ही करनो एसें अपरार्कमें स्मृत्यन्तर वाक्य हे. फलपात्र(तूम्बा इत्यादि)की शुद्धि पहलें बताई हे जो उनकूं मलमूत्रादि स्पर्श होय तो त्याग ही करनो. अपरार्कमें ब्रह्मपुराणके वचनसूं ओर प्रकार भी बतायो हे के रज्जु, छाल इनके पात्रनकी तथा चमस(यज्ञकी पात्रविशेष)की, तूम्बाकी, चर्मकी जलसूं तथा माटीसूं शुद्धि करकें गायके पूंछके बालनसूं घर्षण करकें शुद्धि करनो. ओर चर्मकी शुद्धि कश्यपने एसें बताई हे के तृणके, काष्ठके, रज्जुके, भोजपत्र, सनके, रेसम, लाखके, चर्मके, बांसके, तूम्बाके, पत्रके, छालके पात्र इत्यादिनकी वस्त्रवत् शुद्धि करनी. माटी, चाम, काष्ठ के पात्रनकूं बहोत संसर्ग भयो होय तो त्याग करनो. खराब स्थलमें धरे होंय तो धोनो. परोक्षमें आए होंय तो प्रोक्षण करनो. एसें ही काच्छप वलय(कछुआकी चामके कडा इत्यादि)की शुद्धि चर्मवत् करनीं. एसें ही ओरनकी शुद्धि भी समझनी.

18. शय्याकी शुद्धिको विचार

बौधायन ऋषिको वाक्य हे के

"आसन, शय्या, यान, नौका, मार्ग, तृण, ईटके पंजाए इन सबनकी शुद्धि पवनसूं तथा सूर्यकी किरणसूं होय हें. अपनी शय्या, अपनो आसन, अपनो यान, अपनी स्त्री, अपनो पुत्रादिक, अपनी कमण्डलु ये सब शुद्ध हें. ओर ये ही चीज दूसरेकी अशुद्ध समझनो".

हारीतने भी कह्यो हे के कोई एसें माने हें के यान, शय्या, शुद्ध हें पर ये बात योग्य नहीं हे क्योंकि धर्मशास्त्रमें ब्राह्मणादिक चार वर्णनमें उच्चता-नीचता हे तासूं ऊंचे वर्णकूं नीचे वर्णकी शय्यापे न बेठनो तथा नीचे वर्णकूं ऊंचेकी शय्यापे न बेठनो. कोई पातकी-उपपातकी होय ओर वाकी शय्यादिकमें शुद्ध बेठ जाय तो वाकूं भी संसर्गदोष लगे हे तासूं भी नहीं बेठनो. जेसें रोगीके संसर्गसूं अच्छेकूं भी रोग लग जाय हे तेसें ही पापीके शय्यादिकपे आरोहणसूं शुद्धकूं भी पाप लगे हे. तासूं शय्या, आसन इत्यादि पृथक्-पृथक् ही चहियें ओर पृथक् ही उनकी शुद्धि करनो अच्छी बात हे. ओर परदेशमें शैया अपनी न होय तब तो कम्बल इत्यादि पवित्र वस्त्र दूसरेकी शय्यापे बिछायकें वा शय्यादिकको उपयोग करनो. क्योंके वेसे ही पतितादिककी शय्याके स्पर्शमें सचैल स्नान शास्त्रमें लिखो हे एसें

अपरार्कमें हारीतऋषिको वाक्य हे. एसें ही आसन, गादी, जाजम इत्यादिकी भी व्यवस्था समझनी. स्मृत्यन्तरमें तो एसें कह्यो हे के "आसन, यान, शय्या तथा बहोतसी इकट्टी चीज इनकूं जो चाण्डालादिक भी स्पर्श करें तो भी प्रोक्षणसूं ही शुद्धि होय हे".

ओर गादी इत्यादिनकूं उच्छिष्टको स्पर्श भयो होय तो सब ग्रन्थनमें देवलऋषिको एसो वचन हे के "गादी, तकिया, पुष्प, रङ्गीन कपडा इनकूं धूपमें सुखायकें, हाथसूं मसलकें, जलके छीटा देनो तब शुद्धि होय हे. ओर बहोत मेले होंय तब तो धोने ही चहियें".

ओर बृहत्पराशरको तो मत एसों हे के "वस्त्रोपस्कर सहित शय्या, रङ्गीन कपडा, फूल इनकी प्रोक्षणसूं ही शुद्धि होय हे".

19. धान्यादिककी शुद्धिको विचार

"धान्य जो बहोत होय अर्थात् अनेक पुरुषनसूं उठसकें इतनो धान्य होय तथा बहोत वस्त्र होंय तब प्रोक्षणसूं शुद्धि होय हे ओर थोडेनकी धोएसूं शुद्धि होय हे".

ये ही बात याज्ञवल्क्यऋषिने कही हे. या बातमें बौधायनऋषिकी सम्मति भी हे के जो इकठ्ठे काष्टादिक होंय उनकूं चाण्डालादिको स्पर्श होय तो धोयकें सुखाने तब शुद्धि होय हे. ओर एक पुरुषसूं न उठें इतने होंय तो काष्ठ तथा पथ्थर कूं भूमिके समान समझनो.

लौगाक्षिने भी कह्यो हे के "चाण्डालादिकको स्पर्श भयो होय तो बहोत धान्यकूं तो प्रोक्षण करनो, थोडेकूं धोनो ओर छिलकाके चामर इत्यादि धान्य होंय उनको त्याग करनो".

"बहोत चामर इत्यादिनकी जलके प्रोक्षणसूं शुद्धि होय हे. शाक, मूल, फल की शुद्धि जितने भागकूं स्पर्श भयो होय वाके त्यागसूं होय ह. और मूत्रादिसंसर्ग भयो होय तो जितनेमें संसर्ग होय वितनेकूं फेंक देनो. ओर अपवित्र धूल इत्यादिको संसर्ग भयो होय तो छिलका उतारेसूं शुद्धि होय हे".

एसे बौधायनने कह्यो हे. कश्यपने एसें कह्यो हे के

धान(छिलकासहित चामर) जो, गेहूं इनकूं चाण्डालादिके स्पर्शमें अनेक पुरुषनसूं उठ सकें इतने होय तो प्रोक्षणसूं शुद्ध करनो. ओर यासूं थोडे होंय तो जरती लकडी चारों ओर फिरायके शुद्धि करनी. यासूं भी थोडे होंय तो धोयवेसूं शुद्धि होय हे. एसे ही जिनके छिलका उतारलीने हें एसे चामर इत्यादि होंय तो उनकूं खूब हाथसूं घिसने तब शुद्धि हे. ओर अनेक पुरुषसूं उठ सकें इतने होंय तो प्रोक्षणसूं शुद्धि होय हे. ओर मूंग इत्यादि एक आदमीसूं उठ सकें इतने होंय तो हाथसूं घिसवेसूं शुद्धि होय हे. ओर वासूं थोडे

होंय तो दरवेसूं शुद्धि होय हे. ओर अनेक पुरुषनपे उठें इतने होंय तो प्रोक्षणसूं शुद्धि होय हे. ओर बहोत ही थोडे होंय तो त्याग ही करनो.

आदित्यपुराणमें एसें कह्यो हे के जो घरमें आंच लगी होय ओर पशु, मनुष्य इत्यादि प्राणीको मरण भयो होय तो वा घरको धान्य(अनाज) खानो नहीं. ओर वा घरके पात्रादिक भी न लेने. माटीके पात्रमें धरे होंय अथवा पृथ्वीमें गडे होंय एसे जो यव, उर्द, तिल इत्यादिकनके स्वीकारमें दोष नहीं हे. ओर जहां अग्नि लगी होय ओर केवल घर जरो होय पर प्राणीकी हत्या न भई होय तो वा घरकी जो चीज बची होंय उनके लेवेमें दोष नहीं हे एसें अपरार्कमें हे.

ओर मिताक्षरामें "प्रोक्षणं संहतानां च बहूनां धान्यवाससाम्" याकी व्याख्यामें एसें लिख्यो हे के धान्यको अथवा वस्त्रनको ढेर हे तामेसूं थोडेनकूं चाण्डालादिकनने छूए हें, बहोतसे नहीं छूए हें तहां छुए भए वस्त्रनकूं धोनो ओर बिनाछूएनको प्रोक्षण करनो. एसे ही छुए भए धान्यकूं काढ डारनो बाकीको रहन देनो. ओर छुए भए अधिक होंय ओर अनछुए थोडे होंय तब भी वस्त्रनकूं धोनो ओर धान्यको त्याग करनो. ओर छुए तथा अनछुएनकी समानता होय तो प्रोक्षणसूं शुद्धि होय हे. इतनो छूयो, इतनो नहीं छूयो एसें निश्चय नहीं होय तो धोनो ही चहिये. अनेक पुरुषनसूं उठ सकें इतने वस्त्र तथा अनाज होंय तो प्रोक्षणसूं शुद्धि होय हे. या शुद्धिके बतायवेसूं परम्परासूं स्पर्श भयो होय तहां भी शुद्धि एसें ही समझनी.

ओर मर्यादासिन्धुमें एसें कह्यो हे के बहोत धान्यको अर्थ ये समझनो के आधे मनसूं अधिक होंय. ओर कोई एसें भी कहे हें के देश, काल, शक्ति इत्यादि देखकें 'बहोत' धान्य 'थोडो' धान्य एसे जहां पद होंय तहां अर्थ करनो. जेसे भिखारीकूं अकालमें पावसेर अनाज भी बहोत धान्य हे एसें कह्यो जाय हे. ये सब बात मर्यादासिन्धुमें हे सोही योग्य हे. क्योंके एकादशस्कन्धमें भगवान्को वाक्य भी एसो हे के सामर्थ्य देखकें शुद्धि-अशुद्धि माननीं. एसे ही अनेक पुरुषनसूं उठसकें वे वस्त्र बहोत कहावे हें. ओर तीनसूं अधिक होंय वे भी बहोत कहवामे हें पूर्वोक्तप्रकारसूं. नागदेवीयमें सङ्ग्रहकारने एसें कह्यो हे के "सुपेद वस्त्र 20 होंय तो वे बहोत कहावे हें. छींटके 11 होंय ते बहोत कहावे हें. ओर कसूम्भके रङ्ग 3 होंय तो भी बहोत कहावे हें". ओर याज्ञवल्क्य "प्रोक्षणं संहतानां च बहूनां धान्यवाससाम्" या श्लोकेमें 'संहतानां' पदको अर्थ विज्ञानेश्वरने एसो कर्योहे के पहलें जिनकी शुद्धि बताय आए वे पदार्थ इकठ्ठे होंय उनको नाम संहत हे. ओर मर्यादासिन्धुमें 'संहत'को अर्थ एसो हे के एक चीजसूं दूसरी चीज लग रही होय वासूं ओर लग रही होंय उनको नाम 'संहत' हे. अथवा 'संहत' नाम कठिन चीज, जेसें जमो भयो घी, गुड, आमिक्षा(बिना जमो दही) को हे. अथवा अङ्गिराऋषिने एसें कही हे के "शय्या, आसन, यान, रोमके वस्त्र अर्थात् कम्बर इत्यादि इन सबनको नाम 'संहत' हे".

अब ये ‘संहत’ शब्दके जितने अर्थ करे हें वे सब घट सके एसे हें क्योंकि एकादशके भगवद्वाक्यको प्रमाण पहलें दे चुके हें तासूं. जल सिवाय जितने घृत, तेल इत्यादि ढीले पदार्थ हें उनकी शुद्धि प्लवनसूं होय हे. ‘प्लवन’ नाम बहकें बाहर निकसनो. जेसें घीकी हांडी घीसूं पोंनी वा आधी भरी हें ओर कुत्ता-कौआसूं छूय गई होय तो वाके घीकूं तपानो ओर दूसरो घी तपायके वामें डारनो जब उभरकें थोडो जाय तब वा घीकूं शुद्ध समझनो एसें विज्ञानेश्वरने कह्यो हे. अमेध्य(अपवित्र थूक-खखार इत्यादि) सूं छूयो भयो पदार्थ घृतादिकसूं लग जाय तो भी एसें ही शुद्धि करनो. याहीको नाम ‘उत्पवन’ हे. क्योंके मनुने कह्यो हे के घी इत्यादि छूय जाय तो उनकी शुद्धि उत्पवनसूं करनीं. ओर ‘उत्पवन’को अर्थ विज्ञानेश्वरने एसो करो हे के घी इत्यादिकूं दूसरे पात्रमें कपडा इत्यादि लगायकें छाननो ताको नाम ‘उत्पवन’ हे. जो उत्पवन(छाननो) न करो जाय तो बाल, माखी, मच्छर, चेंटी इत्यादि जीव नहीं निकस सकें. तासूं उत्पवन करनो. ओर कूल्लूकभट्टने ‘उत्पवन’को अर्थ एसो बतायो हे के अपवित्र घीकूं तायकें दश अङ्गुलके दो कुश लेकें दोनों हाथनमें “पवमान: सुवर्चन:” या वेदके सगरे मन्त्रसूं वा घीकूं हलानो ताको नाम उत्पवन हे. अथवा विन कुशनसूं वामेंसूं थोडो घी निकास डारनो ताको नाम उत्पवन हे. ये बात सेरभर घी होय तबतांई करनी. ओर सेरसूं थोडो होय तब तो त्याग ही करनो. ये शुद्धि कुत्ता, कौआ छूएं तब की हे. ओर नीच जाति हांडीकूं छूएं तब तो पहले बताए जो तायकें, दूसरे पात्रमें करकें, थोडो घी ओर डारकें, थोडो उभरायकें पटकनो सो ही शुद्धि करनी एसो शिष्टाचार हे. बौधायनऋषिने कह्यो हे के संहत दूध-दही इत्यादि अपवित्र भए पे दूसरे पात्रमें करकें उभरायके उनकी शुद्धि करनी. शूद्रके पात्रमें पूर्वोक्त पदार्थ होंय तो भी ये ही शुद्धि करनी. ओर नीच जातिके हाथके घृत इत्यादिनकूं लेकें, तायकें दूसरे पात्रमें छाननो तब शुद्धि होय हे. ओर जेसी ये घृतादिककी शुद्धि बताई तेसी ही रसादिककी भी समझनी एसें शंखऋषिने कह्यो हे. शाकपत्रादिककूं अशुद्धता भई होय तो जितनो भाग दूषित होय वाकूं त्याग करकें शेषकूं अन्य पात्रमें करके जलमें उभरायकें शुद्धि करनी. मर्यादासिन्धुमें कह्यो हे के धान, चामर, शाक, मूल, फल इनकूं पात्रान्तरमें शुद्ध करनो. तासूं बृहत्पराशरने कह्यो हे के “कच्चो मांस, घी, अंडी इत्यादिके तेल इतनी वस्तु म्लेच्छके पात्रमेंसूं निकसेपे शुद्ध समझनीं”. ओर “दूध, दहीं, घी ये ग्वालियानके पात्रमें रहें तब ताईं वा पात्रकूं शुद्ध समझनो. बेचवेके पदार्थ जितने दुकानमें होंय सो सब शुद्ध समझने. ओर कारीगरकी हाथकी चीज जितनी होंय सो सब शुद्ध हें”. म्लेच्छ यदि दूध-दही बेचतो होय तो वाके हाथके तथा वाके पात्रमें रहे भएनकूं न लेनो. क्योंके “म्लेच्छसूं नीचो कोई नहीं हे”. दुकानकी चीज सब पवित्र हें एसें पहलें कह्यो हे तासूं शाक, फल, प्रभृति तो म्लेच्छसूं लेवेमें भी चिन्ता नहीं हे. ओर आम्रादिक फल बहोत दिन पर्यन्त धर राखने होंय तो उनको प्रोक्षण करके शुद्धि करनी. क्योंके धोयके राखवेमें बास आय जाय. ये सब शुद्धि कल्पना, युक्ति, प्रयोजन इनके बलसूं समझनी. जेसें शास्त्रमें कह्यो हे के “कारीगरको होय शुद्ध हें” तासूं ये बात सिद्ध भई के

धोबी, दरजी इनकी छुई भई चीज शुद्ध समझनी. नीच जातिके कारीगर जा चीजकूं बनावें अथवा बनीकूं ही सुधारें तो वो वस्तु अशुद्ध नहीं होय हे. जेसें धोबी धोयकें सुधारके वस्त्र लावे वे शुद्ध हें. कोरिया, चमार इत्यादि जा चीजकूं बनामें वो वस्त्र, सूप इत्यादि सब शुद्ध हें. एसें हीं जा अन्नादिकके लगाए बिना वस्त्रादिककी उत्पत्ति अथवा उज्वलता नहीं होय वो अन्नादिक भी छूयकें कारीगर लगावें तो भी शुद्ध समझनो. जेसें कपडामें माढी हे. ताहीसूं शंखऋषिने कह्यो हे के "कारीगरको हाथ जामें अनेक वस्तु पेदा होती होंय वे कार्यालय, साचें इत्यादि शुद्ध हें". पैठीनसीने कह्यो हे के "मद्यको कारखानो अर्थात् मद्यालयकूं छोडकें सब कार्यालय शुद्ध हें". विज्ञानेश्वरने ये कह्यो हे के "कारीगर इत्यादिनकूं सूतक होय तोहू उनको हाथ शुद्ध हे". क्योंके स्मृत्यन्तरमें एसो वाक्य हे "कारीगर, वैद्य, दासी, दास, राजा, राजभृत्य इनकी सूतकादिकमें हू सद्यः शुद्धि होय हे".

20. पक्वान्नकी शुद्धिको विचार

अपरार्कमें तथा सदाचारचन्द्रोदयमें यमको वचन हे के

"जा पक्वान्नमें माखी, कीडा, मुसलेंडी, बाल, पतंग इनमेंसूं कोई भी होय तो वो अशुद्ध होय हे. तासूं वामेसूं जो माखी इत्यादि पडी होंय वाकूं निकासकें वा अन्नपे थोडी राख लगानी अथवा जरती लकडिया चारों ओर फेरनीं अथवा सोनेके जलकें छींटा देनें अथवा वेसेई जलसूं प्रोक्षण करनो तब शुद्धि होय हे".

एसे ही

"जाके उपर छींक भई होय अथवा जाकूं पल्लेसूं हलायो होय अथवा जाकूं रजस्वलाने देख्यो होय ता पक्वान्नकी भी पूर्ववत् शुद्धि करनीं".

यहां जो पहलें माखी बताई सो माखी नीलरङ्गकी समझनीं ओर रङ्गकी माखी पवित्र हे. तासूं बौधायनने कह्यो हे के "नीलमाखी, मच्छर, खटमल, माथेकी जूआं, कपडाकी जूआं ये पक्वान्नमें पडें तो पूर्वोक्त शुद्धि करनीं". सदाचारचन्द्रोदयमें कह्यो हे के "माखी, डांस, मच्छर, घुन, छोटी चेंटी, मांसको कीडा ये सब भोज्यपदार्थ सिवाय सर्वत्र पवित्र हें". बौधायनने कह्यो हे के बाल, कीडा, नख, रोम, मुसलेंडी ये अन्नमें दीखें तो वितने अन्नकूं पटककें प्रोक्षण कर भस्म लगाय ब्राह्मणके वचनसूं वाकूं स्वीकार करनो, तीन व्याहृतिके जो पद हें उनको ध्यान करके फिर खानो चहिये. सदाचारचन्द्रोदयमें तथा बौधायनके वाक्यमें त्वक्(चाम)को भी पाठ दीखे हे एसो ही याज्ञवल्क्य वाक्य हे. कोई शंका एसी करे के गौतमने कह्यो हे के पक्वान्न, बाल, कीडा इत्यादिसूं दूषित भयो होय तो नहीं खानो ताको समाधान निर्णयामृतमें तथा मिताक्षरामें एसो हे के बार कीडा इत्यादि रंध गए होंय तब अन्नकूं न खानो एसें गौतमऋषिको वचन लगानो तब विरोध नहीं आवे हे. ये ही बात योग्य हे, अन्यथा ओर वाक्यनसूं विरोध आवेगो.

गायने अन्नकूं सूंघ लीनो होय तब भी ये ही शुद्धि करनी एसें मार्कण्डेयपुराणमें तथा याज्ञवल्क्यमें वचन हे. तासूं कुत्ता-कौआ इत्यादि जा पक्व अन्नकूं छूय जांय ताकी शुद्धि पराशरने एसें बताई हे के जो आधे मनसूं अधिक पक्वान्न होय ओर जो कुत्ता-कौआनने छूयो होय तो ब्राह्मणसूं वाकी शुद्धि पूछनी. जेसें वे कहें तेसें करनी. ओर कुत्ता-कौआकी लार जितनेमें होय वितने अन्नकूं फेंककें अष्टोत्तरसहस्र गायत्रीके पवित्र जलसूं प्रोक्षण करके जरती लकडी चारों आडीसूं फेरकें खायवेमें दोष नहीं हें. जमदिग्निने भी कह्यो हे के जो पक्व अन्न अध मन होय तामें जो बाल अथवा क्षुद्र जन्तु रंध गए होंय अथवा कुत्ता-कौआको स्पर्श भयो होय तो पूर्ववत् वाकी शुद्धि जाननी. एसें ही खरीदो भयो जो पक्वान्न हे ताकी शुद्धि भी करनी. ओर दो बेर पकायो होय अथवा बासी होय इत्यादिक जो कोई अपवित्र अन्न हे ताकी ये शुद्धि अर्थात् अष्टोत्तर सहस्र गायत्रीके मन्त्रसूं शुद्धि बताई सो नहीं हें किन्तु वाकी शुद्धि अल्प हे. केश-कीट के रंधवेसूं अन्न छूए हे एसो जो गौतमको वचन कह आए हैं वो थोडो अन्नकी अशुद्धि बतावे हे, बहोत अन्न तो नहीं छूए हे एसे समझनो.

अपरार्क मर्यादसिन्धु हेमाद्रिमें यम ओर मनु को वचन हे के देवद्रोणी (देवयात्रा अथवा बडो कढा)में, विवाहमें, यज्ञमें, उत्सवमें अन्नकूं कुत्ता-कौआ छूय जांय तो वितनो अन्न फेंकके बाकीकेकी शुद्धि करके उपयोगमें लेनो. जमे भए पदार्थनकी प्रोक्षणसूं शुद्धि करनी ओर ढीले पदार्थनकी तपायवेसूं शुद्धि करनी. बकरीके मुखके स्पर्शसूं भी शुद्धि होय हे.

21. घी-दूध इत्यादिकी शुद्धि

"घी, पायस(दूधकी चीज दही इत्यादि), दूध, गन्नेको रस, गुड, शूद्रकी भण्डेरीमें रह्यो मठा, सहत ये सब वस्तु पवित्र समझनीं". ओर जो इन वस्तुनको आधारपात्र दूषित होय तो दूसरे पात्रमें ठलाएसूं शुद्धि करनीं एसें शंखऋषिने कह्यो हे.

सन्धिनी(गर्भवती) गायको दूध नहीं पीनो क्योंके वा बेर वो ऋतुमती हे तासूं. ब्याहें जाकूं दश दिन अथवा सात दिन नहीं भए हें वा गायको दूध भी नहीं पीनो क्योंके वाको रज निवृत्त नहीं भयो हे तासूं. बछडा जाकूं मर गयो हे एसी गायको दूध भी नहीं पीनो क्योंके वो शोकयुक्त है. ओर बछडाके शोककूं भूल गई होय तब भलें पीनो.

ओर दूधके लोभसूं बछडाकुं पिवाये बिना दूध निकार्योहोवे सो दूध अपवित्र होवे हे, क्योंके खातेके हाथमेंसूं जैसें कोर छिनायकें खाय तेसें बिना बछडा दूध काढ्यो हे. 'विनावत्सात्' को अर्थ मोकूं एसो भी प्रतीत होय हे के दुही भई गायके दूध पीवेको अधिकार बछडा सिवाय ओरनकूं नहीं हे. अर्थात् दुहे पीछे तो बछडा ही पीए.

1. तुरत व्याही गायको दूध सात दिन न पीनो,

2. दश दिन नहीं पीनो,

3. महिनाभर नहीं पीनो, महिनाके पीछे वो अमृत हे.

ये जो तीन पक्ष हें सो रजोनिवृत्तिकी सूचना करवे वारे हें. जो सात दिनमें ही रजोनिवृत्ति निश्चय होय तो तब ही पीनो. ओर दशमें होय तो तब ओर महिनामें तो नि:सन्देह हेई. पर आजकाल दशदिन पीछे ही पीवेको शिष्टाचार हे. एसें ही ग्याभन भएपे सन्धिनी(कामुकी)के दूध पीवेकी चिन्ता नहीं हे. एसे हीं मृतवत्सा जो गाय हे वो खर भूसी इत्यादि खवायवेसूं मरो भयो जो बछडा हे वाकूं सूंघे नहीं ओर वाके शोककूं भूलजाय तो वाके दूध पीवेमें भी चिन्ता नहीं हे. ओर बछडाकूं भी दूध इतनो राखनो जासूं वाकी तृप्ति होय. क्योंके पहलें बछडा लगायो ओर दूध सगरो दोहवेमें आयो फिर बछडाकूं दूध पीवेकूं न मिले तो वो दूध अशुद्ध होय हे. तासूं बछडाकूं दूध अवश्य राखनो चहियें.

एसे हीं स्यन्दिनी ओर यमसू गायके दूध पीवेमें दोष हें एसें गौतमने कह्यो हे. ‘स्यन्दिनी’ नाम वाको हे के जाकें थनके हाथ लगाएसूं दूध झरवे लगे. दूध पीवेमें ये दोष हे के स्यन्दिनीको दूध दुहे तो वाके थन खाली होय जांय तो वाकूं पीडा होय तासूं.

एसें ही यमसू(दो बछडा जाके होंय) गायके दूध पीवेमें देष हे. क्योंके दूध काढवेमें वाके दोनो बछडानको पोषण नहीं होय तासूं. यद्यपि शास्त्रमें स्यन्दिनी ओर यमसूं के दुग्ध पीवेको निषेध मात्र हे पर कारण नहीं बतायो हे पर हमने जो ये कारण लिख्यो हे सो ही उचित मालूम पडे हे. मिताक्षरामें कह्यो हे के दूधको निषेध करो हे तासूं दूधसूं जो चीज बनी होंय दही इत्यादि उनको भी दोष हे. गोमूत्र, गोबर लेवेमें तो दोष नहीं हे एसें मिताक्षरामें कह्यो हे पर जा गोबर-गोमूत्रमें भी रजको अंश दीखे वाकूं तो न लेनो एसें मोकूं मालुम पडे हे.

“ऊंटको दूध, एकशफ(गधी इत्यादि)को दूध, स्त्रीको दूध, अरण्यके पशुनको दूध, भेडको दूध नहीं पीनो”. ब्रह्मपुराणमें कह्यो हे के “दाखको रस, गन्नेको रस ताजो होय तो पवित्र हे”.

“ब्रह्मचारी, सक्क्यासी, सन्तान होयवेकी इच्छावारो, यज्ञ करवेकी इच्छावारो, रस्तागीर, सर्वस्व जाने देदीनो वो पुरुष, गुरु-माता-पिताकी सेवा करवेवारो, विद्याध्ययन करवेवारो, रोगी इन सबनकें हाथमें आई जो भिक्षा हे वो पवित्र समझनी”.

अर्थात् पूर्वोक्त ब्रह्मचारी इत्यादिनकूं अपनी उदरपूर्त्ति लायक भिक्षा जब ताईं न मिले तब ताईं मार्गमें चलवेसूं वो भिक्षा अशुद्ध नहीं होय हे. ओर उदरपूर्तिसूं अधिक भिक्षा मांगे तो मार्गमें अनेक अपवित्रनको स्पर्श होय तासूं वा भिक्षाकूं धरके आचमन करे तब शुद्धि होय हे. ये आचमन थोडी अशुद्धि में समझनो. विशेष संसर्गमें तो भिक्षात्यागपूर्वक स्नान करनो चहिये. एसें ही परिवेषणके समयमें परोसवेको भक्ष्य पदार्थ होय तब उच्छिष्टको स्पर्श होय तो आचमन करनो. ओर खायवेकी चीज हाथमें न होय पर वस्त्रादिक हाथमें होय तब तो वा चीजकूं हाथमें राखकें ही आचमन करेसूं शुद्धि होय हे एसें मनुस्मृतिमें कह्यो हे.

ब्रह्मपुराणमें कह्यो हे के “हाथमें जाके खायवेके पदार्थ हें एसो परोसवेवारो जो उच्छिष्ट मुखवारे शूद्रसूं छूय जाय तो वा हाथकी चीजकूं देदेनीं पर खानीं न चहिये”. यासूं ये मालुम पडे हे के शूद्र सिवाय ओर कोई ब्राह्मणादिक उच्छिष्टमुख होय वासूं परोसवेवारो छूए तो दोष नहीं हे. सदाचारचन्द्रोदयमें वशिष्ठ तथा मानव वाक्य लिखकें ये कही हे के जो पदार्थ अङ्गपे राखिवेलायक होय वाकूं तो राखकें आचमन करनो ओर अङ्गपे राखवेलायक न होय तो धरतीमें धरकें वाको स्पर्श करके आचमन करनो. यद्वा जा उच्छिष्टमुख पुरुषके स्पर्शमें शास्त्रमें आचमन लिखो हे ताके स्पर्शमें खायवेकी चीज हाथमें होय तो वाकूं पृथ्वीपे धरके आचमन करके वा चीजको प्रोक्षण करके स्वीकार करनो. या कहवेसूं ये सिद्ध होय हे के जो जूठन मोढेवारेसूं छूए वाकूं ही दोष लगे हे पर हाथकी चीज अपवित्र नहीं होय हे.

एसे ही खायवेकी चीज रेशमी वस्त्रादिकमें लिपेटकें दूसरे घरमें भेजी होय अथवा देशान्तरमें भेजी होय तो भी वो शुद्ध हे. ओर लेजायवे वारेकूं मार्गमें अमेध्य(थूक, खखार)को स्पर्श होय तो त्याग ही करनो एसो शिष्टाचारसूं मालुम पडे हे. क्योंके विष्णुपुराणमें कह्यो हे “शूद्रको भी अन्न घरमें आयो होय तो वाकी प्रोक्षणसूं शुद्धि करनी”. तो यासूं ये भी प्रमाण मिलोके दूसरे घरमें लेजायवेमें चिन्ता नहीं हे ओर अमेध्यके स्पर्शमें तो त्याग ही करनो.

सदाचारचन्द्रोदयमें ओर भी बात कही हे के “अरण्यमें, निर्जनस्थानमें, रात्रिमें, चोरसिंहादिकको जहां भय होय वा रस्तामें चीज कछु हाथमें होय ओर मलमूत्र त्याग करे तो भी दोष नहीं हे”. पक्वान्नादिक भी पास होंय तब वाकूं धरतीपे धरकें अपने मलमूत्राङ्गकी शुद्धि करकें वा पदार्थको प्रोक्षण करे तब शुद्धि होय. ये ही बात हारीतने कही हे. ओर पुष्पादिक अथवा तृणादिक अथवा घृत प्रभृति जो मलमूत्रादि त्याग करते समें होय तों उनकी प्रोक्षणसूं शुद्धि होय हे. मार्कण्डेयऋषिने तो ये कह्यो हे के मलमूत्रादिके त्याग समयमें घृतपक्व पक्वान्न भी हाथमें होय तो वाकूं धरतीमें न धरनो ओर अङ्गमें ही वाकूं राखकें देहशुद्धि करकें आचमन करकें वा अन्नको प्रोक्षण करकें सूर्यकूं वो पक्वान्न उठायके दिखानो, वामेंसूं ग्रास एक धरतीपे फेंकनो फिर वो अन्न शुद्ध समझनो. अब या कहवेसूं ये सिद्ध भयो के मलमूत्रादि त्यागमें विपत्तिमें पक्वान्न नहीं छुए तो उच्छिष्ट मुखके छुएसूं तो पक्वान्न नहीं ही छूए ये सिद्ध होय हे. पहलें जो पक्वान्नको अर्थ घृतपक्व पक्वान्न करो ये बात भी योग्य हे क्योंके ग्रहणमें पक्वान्नको त्याग करनो एसो वचन हे, ताके ऊपर फिर एसो वाक्य हे के “कांजी, दूध, मठा, दही तैलपक्व, घृतपक्व मणिक नामक यज्ञपात्रमें रह्यो पानी ये नहीं छुए हें”. तो यहां घृतपक्वकूं शुद्ध बतायो हे एसे हीं मलादि त्याग समयमे भी अर्थ लेनो ऐसे वायुपुराणमें चातुर्मासमाहात्म्यमें कह्यो हे.

तथा अपरार्कमें आपस्तम्बको वचन हे के

“अशुद्ध आदमी जा अन्नकूं लायो होय वो अन्न अशुद्ध हे पर अभोज्य नहीं हे. ओर अशुद्ध शुद्र जा अन्नकूं लावे वो अन्न अभोज्य हे. जा अन्नमें बाल पडो होय,

अमेध्यसंसर्ग होय, अमेध्यको कीडा होय, मुसलेंडी होय, पांव लग गयो होय, पल्लो पडो होय, कुत्ताने देखो होय, अपात्रने देखो होय, दासीको लायो भयो होय, रात्रिमें लायो भयो होय, जेमतेमें शूद्रने छूयो होय तो, वाकी पातरको अन्न अयोग्यनने छूयो होय वो, जेमतेनमें बिना उठें उच्छिष्ट परोस देवे, आचमन लेले वो, निन्दा करके दियो भयो हे वो, सूंघो होय वो ओर भी जो कोई अमेध्य हें उनके संसर्गको अन्न अभोज्य नहीं हे पर अपवित्र हे".

तासूं वा अन्नकी शुद्धि अग्निसम्बन्धसूं अथवा प्रोक्षणसूं अथवा सुवर्ण स्पर्शसूं अथवा बकरीके मुखके स्पर्शसूं करनीं.

अब यहां जो पहलें कह आए के जो अशुद्ध शूद्र हे वाको छुयो भयो पक्वान्न अभोज्य हे अर्थात् शुद्ध जो शूद्र हे वाको स्पृष्ट पक्वान्न भोज्य हे एसें यद्यपि यहां बात निकसे हे तथाऽपि भगवत्प्रसाद होय वो ही तो घृतपक्व शूद्रके हाथको खानो, ओर नहीं खानो एसो शिष्टाचार हे. कलियुगमें स्मृतिसूं भी शिष्टाचार बलवान् हे.

22.घृतादिपक्व पदार्थके भक्ष्याभक्ष्यको विचार

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें कह्यो हे के "शूद्रके हाथसूं घृतपक्व, तैलपक्व, मिष्टान्न भुनो भयो सतुआ इतने पदार्थ नहीं खाने चहियें". सुमन्तु, अङ्गिरा, हारीत, शंख इन ऋषिनको एसे जो वचन हे के

"दही, दूध, सतुआ, तैलपक्व, तिलकूट, अपूप, दूधकी करी भई वस्तु, भाडमें भुनी वस्तु, दहीमिलेमां सतुआ, धानकी खील, मठा, घी, मधु इत्ते पदार्थ शूद्रके हाथके खायवेमे हूं चिन्ता नहीं हे".

ये सब वचन आपत्कालमें समझने. क्योंके शूद्रान्न भोजनको जो निषेध हे तासूं विरोध आवे हे. ओर शंखको एसो वचन हे दुकानकी बिकती चीज नहीं खानीं ताको भी विरोध आवे हे एसें अपरार्कमें लिख्यो हे. ओर सदाचारचन्द्रोदयमें तो शूद्रान्न भोजनके विधिनिषेध वाक्य लिखके कह्यो हे के पूर्वोक्त पदार्थ शूद्रसूं लेकें वाके घरसूं बाहर निकसकें नदी तटादिकपे जायकें भोजन करवेमें दोष नहीं हे क्योंके पराशरने कह्यो हे "शूद्रान्नकूं भी ब्राह्मण नदीतटपे जायकें भोजन करे तो दोष नहीं हे" तासूं कोईने एसें कह्यो हे के तैलपक्वादिक पदार्थ लवणरहित होंय तो सच्छूद्रके हाथसूं भोजन करवेमें दोष नहीं हे. निर्णयामृतमें एसें कह्यो हे के शूद्रके हाथसूं पक्वान्न भोजन न करनो ताको ये निषेध हे. दिनकरोद्योतमें एसें कह्यो हे के शूद्रान्न भोजनको जो निषेध हे सो कलिवर्ज्य प्रकरणमें गिन्यो हे तासूं कलियुगमें शूद्रके हाथको पक्व अन्न गृहस्थी ब्राह्मणादिकनकूं नहीं खानो चहिये. ओर ब्रह्मचारीकूं तथा यतिकूं तो कलियुगमें भी दोष नहीं हे. ओर शूद्रके घरमें ब्राह्मणादिकनने ही अन्न पक्व करो होय तो गृहस्थकूं भी खायवेमें चिन्ता नहीं हे. एसें ग्रन्थकारनने शूद्रान्नभोजनके विधि निषेध वाक्यनकी व्यवस्था बांधी हे.

पर मोकूं तो ओर मालूम पडे हे. यथा

देवल ऋषिने कह्यो हे "स्वदास(अपनो दास), नाऊ, ग्वालिया, कुम्हार, कृषीवल(खेती करवेवारों) इन पांचजनेनको अन्न खायवेमें दोष नहीं हे".

याज्ञवल्क्यने भी कह्यो हे के "शूद्रनमें भी स्वदास, ग्वालिया, कुलमित्र(पितृपितामहादि क्रमसूं अपने घरमें रह्यो होय वो), खितहर, नापित इनके अन्न भोजन करवेमें दोष नहीं हे".

हारीतने भी कह्यो हे के "कुलमित्र, कुलपुत्र, भिक्षादेवेवारो, अपनो शिष्य, मित्र, भयसूं रक्षाकरवेवारों, जहां खायवेमें मन प्रसन्न होय इन पूर्वोक्त शूद्रनके अन्न खायवेमें दोष नहीं हे"

—एसें यद्यपि शूद्रान्नको खायवो प्राप्त होय हे. ओर कलिवर्ज्यमें तो दास, ग्वालिया, कुलमित्र, कृषीवल ये चार ही गिनाए हें तासूं इन शूद्रनके अन्न खायवेमें यद्यपि शास्त्रसूं दोष नहीं हे तथापि लोकविरुद्धता हे तासूं पूर्वोक्त शूद्रको पक्वान्न नहीं खानो चहिये. शास्त्रमें कह्यो हे "धर्म भी होय, परलोक विरुद्ध होय तो नहीं करनों". तासूं इन पूर्वोक्त वाक्यनमें अन्न पद हे तहां पक्वान्नको ग्रहण हे तासूं पक्वान्न सिवाय दूधकी चीज, गुड, मिश्री, खांड, फलादिक शूद्रके हाथसूं लेवेमें भी दोष नहीं हे. ताहीसूं मनुस्मृतिमें भी कह्यो हे के शूद्रको पक्वान्न ब्राह्मणादिकनकूं नहीं खानो चहिये. ओर खायवेकूं नहीं होय तो एक दिनके खायवेलायक आमान्न शूद्रसूं लेनो.

ओर एक व्यवस्था ये भी हे के "अपवित्र जल जब ताईं नदीमें मिलो न होय तब ताईं वो अशुद्ध गिनो जाय हे नदीमें मिलेपे वो अपवित्र जल भी शुद्ध ही कह्यो जाय हे" तैसे हीं शूद्रान्न इत्यादि तथा जलादिक ब्राह्मणादिकनके पात्रमें आए पीछें शुद्ध हें ऐसें अपरार्कमें स्मृत्यन्तर वाक्य हे. सदाचारचन्द्रोदयमें भी कह्यो हे के "जेसें जहां-तहांसूं आए भए जल जब ताईं नदीमें नहीं मिलें तब ताईं अशुद्ध कहे जाय हें. नदीमें मिलेपे शुद्ध कहावे हें तेसे हीं शूद्रन्न भी ब्राह्मणके घर शुद्ध हे ओर ब्राह्मणादिकके हाथको स्पर्श भयो ओर वो अन्न शुद्ध हे".

सार ये हे के सच्छूद्रको अन्न सच्छूद्रके घरमें ब्राह्मणने पक्व कियो होय ओर फिर वो अन्न शुद्ध रीतिसूं ब्राह्मणके पात्रमें धरो होय तो वो अशुद्ध नहीं हे. ओर सतुआ, धानकी खील ये शूद्रने हूं पक्व करी होंय तो लेवेमें दोष नहीं. ऐसे ही अभोज्यान्न(जिनके अन्न लेवेमें दोष हे वे)के घरमें उनसूं आमान्न लेकें अपने पात्रमें वा अन्नकूं ब्राह्मण पक्व करके ग्रहण करे तो दोष नहीं हे. सच्छूद्रको लक्षण सदाचारचन्द्रोदयमें बृहत्पाराशरने कह्यो हे के

"जो उत्तम कुलमें उत्पन्न भयो होय, मद्य-मांस न खातो होय, ब्राह्मणादिकनमें भक्ति राखतो होय, वैश्यवृत्ति करतो होय वो सच्छूद्र हे".

जा शूद्रने अपनो घर ब्राह्मणकुं निवेदित कियो होय वाके घरमें तो अपने हाथसूं ब्राह्मणपाक करे तो सर्वथा दोष नहीं हे. क्योंके निवेदनोत्तर उतने समय ब्राह्मणकी भी वहां सत्ता रहे हे.

23.जलकी शुद्धिको विचार

मनुस्मृतिमें कह्यो हे के

“एक गायकी तृप्ति जा जलसूं होय वो जल पृथ्वीपे होय अथवा शिलापे होय पर पवित्र हे जो वामें मलमूत्रादि संसर्ग न होय, रङ्ग न फिरो होय बास नहीं आवती होय तो”.

एसे हीं

“नदीप्रभृतिमेसूं शुद्ध पात्रमें जो जल निकासो होय वो पवित्र हे ओर जो पात्रमें धरकें रात्रि एक भी निकसी होय वो जल अपवित्र होय हे. ओर विशेष जल होय तो अपवित्र नही होय हे”

एसें पारिजातमें कह्यो हे. परन्तु ये बात ताजो जल न मिल सके तब समझनीं. ओर तीर्थको जल तथा चरणामृत ये तो बासी होंय तो भी पवित्र हें. अपरार्कमें देवलको वचन हे के

“बहते जलमें मलादिकको संसर्ग होय तो भी वे पवित्र हें ओर जो थोडो जल होंय अथवा निकासे भए जल होंय उनमें पूर्वोक्त संसर्ग होयवेमें दोष हे. बहोत जलवारे तलाव, नदी इत्यादिमें भी जा घाटपे मल-मूत्र-चाण्डालादिको स्पर्श भयो होय वा घाटकूं छोडकें अन्यत्रसूं जलको उपयोग करनों”.

पैठीनसि ऋषिने कह्यो हे के बहोत भी जल होय पर जामें दुर्गन्ध इत्यादि आवती होय तो वो अपवित्र हे.

अब जो उद्धृत-निकासे जलमें विशेषता यमने बताई हे :

“अरण्यमें हू जो प्याऊको जल होय वो नहीं पीनो. कूआपे भवनके भरवेके तांई जो घडा होय वाको भी पानी न पीनो, कोठीको जल न पीनो, चामको जल न पीनो. शूद्रकूं तो पूर्वोक्त जल पीवेमें दोष नहीं हे. ओर आपत्कालमें तो ब्राह्मणादिक भी वा जलकूं पृथ्वीमें डारकें पीवें तो दोष नहीं हे”.

हारीतने ऐसें कह्यो हे के आपत्तिकालमें भी प्याऊ इत्यादिमेंसूं पृथ्वीपे जो डारो भयो जल हे वहां चाण्डालादि अधम आय जांय तो वा जलकूं नहीं पीनो.

24. जलाशयकी शुद्धिको विचार

देवलने कह्यो हे

"कुत्ता, स्यारिआ, गधा, ऊंट, मांस खायवेवारो पशु इनमेंसूं कोई भी कूआ, बावडी, तलाव इत्यादि जलाशयमें मरो होय तो सब जलकूं निकासनों, पहलें मृतशरीरकूं निकासनों, पांच पिण्ड माटीके वामेंसूं निकासकें फेंकने. ओर पञ्चगव्य मन्त्रपूर्वक वा जलाशयमें डारनों तब शुद्धि होय हे. ओर थोडे जलवारो जो जलाशय होय वाकूं तो ईंट पथ्थर लगायकें जरामनों तब शुद्धि होय हे. ओर विशेष जललावारो जलाशय होय तो 30, 60 अथवा 100 घडा जलके निकासने".

विष्णुने कह्यो हे

"कूआमें पांच नखवारो पशु मरें तो सब जल निकासकें कुदारसूं वा कूआकूं खोदकें ईंटनसूं वाको दाह करकें पञ्चगव्य डारनों फिर नए जल आयवेसूं शुद्धि होय हे. एसे ही प्रवाहरहित जो जलाशय हे ताकी शुद्धि करनी. कूआमें भी जो बहोत जल होय तो 100 घडा पानी निकासवेतें शुद्धि होय हे".

जलाशयमें जोडा, थूक, खखार, विष्ठा, मूत्र, अटकावको लोही ओर भी कोई अपवित्र पदार्थ पडो होय तो साठ घडा जल निकासकें शुद्धि करनीं एसो आपस्तम्बऋषिको मत हे.

जा जलाशयमें कुत्ता, गधा इत्यादि प्राणी मरकें छिन्न-भिन्न मिलकें एकरूप होय गए होंय वाको जल सब निकासकें साफ करकें शुद्धि करनीं. ओर विशेष जल होय तो जो मरो प्राणी हे वाकूं निकासकें 100 घडा पानी निकासवेसूं शुद्धि होय हे.

सबको सार ये हे के थोडे जलमें बहोत शुद्धि करनीं. ओर विशेष जल होय तहां थोडी शुद्धि करनीं. ओर बहोत जङ्गी तलाव इत्यादिमें जो पशु-पक्षी मरो भी होय तो वा घाटकूं छोडकें ओर सब घाट शुद्ध हें. एसे हीं जलाशयमें अल्पजन्तु मरे तो थोडी अशुद्धि हे बडो मरे तो विशेष अशुद्धि हे. ऐसें सर्वत्र विचार करकें सब ऋषिनके वाक्यनकी व्यवस्था करनी.

30 घडा, 60 घडा तथा 100 घडा निकासनों बतायो सो भी जलाशयकी अल्पता, महत्तासूं समझनों.

बहोत जलवारो जो कूआ हे तामें मूसाप्रभृति सूक्ष्म प्राणी मरो होय, जलमें कछू दुर्गन्ध भी होय पर दृढ निश्चय जन्तुमरणको न होय तो जल निकासे पहले भी वा कूआके जलसूं स्नान सक्ध्यादिक करवेमें दोष नहीं हे. जन्तुमरणको ज्ञान होय ता पीछें तो वा जलको माटीके पात्रनमें संसर्ग होय तो विन पात्रनको त्याग करनों. ओर तामें-पीतरके

बासन होंय तो विनकूं खूब बरायकें, लोन खटाई इत्यादिसूं मांजनो चहिये ऐसें मोकूं मालुम पडे हे.

बृहस्पतिने कह्यो हे के जूठन, मलिन, क्लिन्न, विष्ठादिलिप्त जो पदार्थ हें उनकी शुद्धि करवेवारो तो जल हे. पर जलकी शुद्धि केसें होय? तहां ये उत्तर हे के जलकी शुद्धि सूर्य-चन्द्रामाकी किरण पडवेसूं, पवनसूं, गोमूत्र-गोबरसूं होय हे.

यमने कह्यो हे प्रसववारी स्त्री, बकरी, गाय, भेंस, ब्राह्मणी, पृथ्वीपे पडो नवीन जल इनकी शुद्धि दशरात्रके अनन्तर होय हे. बृहत्पराशरने भी जलशुद्धि एसे हीं मानी हे.

आपस्तम्बऋषिने कह्यो हे के म्लेच्छके खुदवाए भए जलाशयमें जाङ्घसूं नीचो पानी होय तो अपवित्र हे वाकूं अनजाने पीओ होय तो रात्रिमें भोजन करनों. ओर जानकें पीओ होय तो आठ पहरको उपवास करनों. ओर जांघसूं ऊंचो पानी होय तो शुद्ध समझनों एसें मर्यादासिन्धुमें जलशुद्धि बताईं हे.

25. पृथ्वीकी शुद्धिको विचार

मर्यादासिन्धुमें तथा अपरार्कमें देवलऋषिको वचन हे के

“अशुद्ध पृथ्वी 3 प्रकारकी हे : अमेध्य, दुष्ट तथा मलिन पृथ्वी. जहां स्वावड भई होय, मनुष्य मरो होय, चण्डाल जहां रहे होय, मुर्दा जहां धरो गयो होय, जहां मलमूत्र होय एसी भूमिकी शुद्धि दहन, खनन, लेपन, वापन, मेघवृष्टि इन पांचनसूं करनी”.

दहन = जलानों. खनन = खोदनों. लेपन = गोबर, माटी, गोमूत्रादिकसूं लीपनों. वापन = दूसरी माटी डारकें वा जगेकूं भरनों. ‘धावन’ जहां पाठ हे तहां धोनों एसो अर्थ करनों. मेघवृष्टि = वर्षाको जल पडनों. इन पांच तरहेसूं अमेध्य पृथ्वीकी शुद्धि करनीं. ओर मेघवृष्टि न होय तो 4 प्रकारसूं ही शुद्धि करनीं.

अपरार्कमें एसें कह्यो हे के श्मशानकी पृथ्वीकी शुद्धि दहनादिक 5 प्रकारसूं करनीं ओर वा सिवाय अमेध्य पृथ्वीकी शुद्धि 4 प्रकारसूं ही करनीं. अशुद्ध पृथ्वीको दूसरो भेद दुष्टपृथ्वी हे. दुष्टपृथ्वी वाको नाम हे के जामें कीडानके पाव पडे होंय, थूक-खखार जहां जम गयो होय, उल्टीकी जगे होय, उच्छिष्ट जहां पडो होय, जहां काऊको वध भयो होय, कुत्ता सूहर गधा ऊंट पभृतिननें जा पृथ्वीको स्पर्श करो होय. ऐसी दुष्ट पृथ्वीकी शुद्धि दहन-खनन-लेपनसूं अथवा दहन-खननसूं ही करनी.

अपरार्कमें एसें कह्यो हे जो बहोत दिन ताईं पृथ्वी दुष्ट भई होय तब तो दहनादिक 3 प्रकारसूं शुद्धि करनीं ओर थोडे कालसूं दुष्ट भई होय तो वा पृथ्वीकूं खुरचनीं ओर दग्ध करनीं.

अशुद्ध पृथ्वीको तीसरो भेद मलिनपृथ्वी हे. मलिन पृथ्वी वाको नाम हे जहां नख, दांत, रोम, त्वचा, तुस, धूर, रज, मल, भस्म, कीच, घास, अङ्गारो, अस्थि इत्यादिक

होय. वा पृथ्वीकी शुद्धि खुरचवेसूं होय हे. तुरत ही मलिन भई होय तो लीपवेसूं, धोयवेसूं, वृष्टिके बरसवेसूं शुद्ध होय हे.

लेपन ओर मार्जन ये तो सर्वत्र समझनों एसो विज्ञानेश्वरको मत हे.

यमने पृथ्वीकी शुद्धि सात प्रकारसूं बताई हे "1.खोदनों 2.पूरनों 3.जरामनों 4.मेघवृष्टि पडनों 5.लीपनों 6.गायनकों फिरामनो 7.बहोत समयको निकसनो".

याज्ञवल्क्यने "मार्जन, दाह, काल, गायनको पांव पडनों, गोमूत्रादिकको प्रोक्षण करनों, खुरचनों, लीपनों" ये सात प्रकार भूमि शुद्धिके बताए हे.

मनुस्मृतिमें एसें कह्यो हे के "पृथ्वीकी शुद्धि बुहारी देवेसूं, गोबरके लीपवेसूं, जलके प्रोक्षणूसूं, खुरचवेसूं, एकरात्रि गायनके राखवेसूं करनी चहिये".

ये जो 5 प्रकार मनुमें कहे हें उनकी व्यवस्था मर्यादासिन्धुमें एसें करी हे के जो निर्लेप भूमि होय वहां सेक करनों तथा गायनकूं राखनों. ओर अमेध्य लिप्तभूमिमें मार्जनादि 3 प्रकार करने एसें मेधातिथिने कह्यो हे. जा भूमिमें मलमूत्रादिकको लेप होय वहां बुहारीसूं झाडनो, खुरचनों चहिये ओर नदीपुलिन-वनादिकमें प्रोक्षण करनों. ओर जहां अस्थि होय ताकूं पटककें वा स्थानकूं खोदकें वा गढेलामें दूसरी माटी भरनों. ओर श्मशानादिककी पृथ्वीके तो पूर्वोक्त पांचो ही प्रकार करने चहिये.

बौधायनने या प्रसङ्गमें विशेष कह्यो हे के जो पृथ्वी बहोत दृढ होवे वाकी लीपवेसूं शुद्धि होय हे. छिद्रवारी भूमिकी शुद्धि खुरचवेसूं होय हे. मलमूत्रादिसूं गीली भूमिकी शुद्धि मलमूत्रादि पटककें दूसरी अच्छी माटी विछायवेसूं होय हे. ऊपरमाऊं जो मुर्दाको स्पर्श होय तो वा भींतकूं भी छीलनों अथवा सूर्यकी किरण वहां डारनों अथवा अग्निज्वालाको स्पर्श करानों. गायके रहवेसूं, खननसूं, दहनसूं, वृष्टिसूं, लेपनसूं, कालसूं, पृथ्वीकी शुद्धि हे.

कालसूं शुद्धि वाको नाम हे जेसे जहां मलमूत्रादिक हें वहां अपने आप थोडे काल गप्ये पे मलमूत्रादि लेप मिटकें स्वच्छता होय हे तो वो कालकृत शुद्धि कहावे हे.

यमने कह्यो हे के जहां गली न होय वो पृथ्वी शुद्ध हे. तथा ग्राममें हूं कहूं-कहूं पृथ्वी शुद्ध हे. ओर जहां लेप न होय वो पृथ्वी सर्वत्र शुद्ध हे.

ब्रह्मपुराणमें कह्यो हे के "ग्रामसूं सो दण्ड बाहर निकसे पे पृथ्वी शुद्ध हे. ओर शहरसूं चारसे दण्ड बाहर निकसेपे पृथ्वी शुद्ध हे. जहां लेप न होय वो पृथ्वी सर्वत्र शुद्ध हे".

भविष्यपुराणमें कह्यो हे "जितनेमें लीलके खेत होंय वो भूमि 12 बरसताईं अशुद्ध रहे हे फिर शुद्ध होय हे. ब्राह्मण जहां रहते होंय, देवमन्दिर होय, गाय रहती होंय वो भूमि गोबर इत्यादिसूं लेपन करे बिना भी शुद्ध हे".

बौधायनने कह्यो हे के "अनेक मनुष्यनसूं उठसके इतनों बडो काष्ठ तथा पत्थर ये पृथ्वीसमान हें". अर्थात् पृथ्वीकी जेसी शुद्धि बताई एसी ही इनकी भी चाण्डालादि

स्पर्शमें करनीं एसें अपरार्कमें हें. चूनासूं जडी भई जो ईंटें हें अथवा वर्णसंकरननें जो बाधी ईंट हे उनकी भी पृथ्वीवत् शुद्धि करनीं एसें मर्यादासिन्धुमें हे.

26. गृहकी शुद्धिको विचार

मर्यादासिन्धुमें मनुस्मृतिको वचन हे के गृहकी शुद्धि मार्जन(बुहारीसूं साफ करनो तथा धूंआ अन्धकारादिककूं निकासनो)सूं तथा धरतीकूं गोबरसूं लीपनो, भीतनकूं सुपेदीसूं पोतनो तासूं होय हे. ये लीपनो-पोंतनो शव चाण्डालादिके संसर्गमें हे. याज्ञवल्क्यने तो पृथ्वीकी शुद्धि कहते समयमें गृहकी भी शुद्धि मार्जन-लेपनसूं बताई हे तासूं नित्य ही अपने घरकी भूमि बुहारनी-लीपनी ये प्राप्त होय हे. घरमें कोई आदमी मरो होय तो वाकी शुद्धि संवर्त्तने बताई हे के

“जा घरमें आदमी मरो होय ता घरके माटीके पात्र सब फेंक देने ओर सिद्ध जो अन्न-पक्वान्न इत्यादि होंय वाको भी त्याग करनो. पृथ्वीकूं गोबरसूं लीपकें बकरीकूं वहां फिरानो. ब्राह्मणनसूं वेदके मन्त्र पढवायकें सुवर्णके जलसूं-कुशजलसूं सर्वत्र प्रोक्षण करामनो तब शुद्धि होय हे”

म्लेच्छादिक घरमें मरे होंय तो बृहद्‌यमने शुद्धि बताई हे के

“जा घरमें कुत्ता, शूद्र, महापातकी, म्लेच्छ, चाण्डाल मरे होंय वा घरमें 4 महिना ताईं न रहनो. ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य के मरवेमें 3 दिन ताईं घर अशुद्ध रहे हे. ओर बाहरकी भूमिमें ये तीन वर्ण मरें तो एक दिनमें शुद्धि होय हे. दहनसूं, प्रोक्षणसूं, लेपनसूं शुद्धि होय हे. यथायोग्य शुद्धि करे पीछें मन्त्र प्रोक्षण तो अवश्य करनो”.

चाण्डालादिक घरमें रहे होंय तो लघुपराशरने ये शुद्धि बताई हे के चाण्डाल जाके घरमें रहे तब खबर पडे पे पीतर, ताम्बो, कांसो इनके जो पात्र होंय उनकूं गलायकें नए बनामने तब शुद्धि होय हे. वस्त्रनकूं धोने, माटीके पात्रनकूं फेंकने. कसूम्भ, गुड, लोन, रूई, दही, घी, अनाज इन सब चीजकूं घरके दरवाजेपे धरकें घरमें अग्नि लगामनीं. जब अग्निकी ज्वालाको स्पर्श होय तब वो घर शुद्ध होय हे एसी मनुकी आज्ञा हे.

धोबिन, चमारी, जीवहिंसा करवेवारी, बांसके पात्र बनायवेवारी, भङ्गिन इनमेसूं कोई भी ब्राह्मणादि चतुवर्णके घरमें अनजाने रहें तो धर्मशास्त्रमें वाको जो प्रायश्चित्त होय सो करनो. यहां वा प्रायश्चित्त लिखवेकी जरूरत नहीं हे तासूं नहीं लिख्यो हे. ओर चण्डालके रहवेमें जो शुद्धि पूर्व बताई वासूं आधी शुद्धि इन धोबिन प्रभृतिके रहवेमें भी करनी. गृहदाहमात्र न करनो.

ओर चण्डाल घरमें आवे तो घरसूं बाहर निकासके मृत्तिकाके पात्र फेंकनो. गुड-लोन प्रभृति रस जिन पात्रनमें होय वे पात्र तथा वे वस्तु नहीं छूएं. दूध, दही, मठाव, इत्यादि रस छूय जाय हें. गोबरसूं सब घरकूं लीपनो.

जातित्यक्त पतित ओर ब्राह्मणनसूं जो प्रायश्चित्त पूछ चुको हे वो यदि घरपे आवे तो चाण्डालवत् वाकी अशुद्धि न समझनीं. ये जो पूर्वोक्त शुद्धि हे सो चारों वर्णनकूं समान समझनीं.

च्यवन ऋषिने कह्यो हे के "चण्डालको संसर्ग जो घरमें मिले तो घरको दहन करनो. माटीके वासनकूं फेंकनो, काठके पात्रनकूं छीलनो, शंख सीप चांदी इत्यादिके पात्रनकूं तथा वस्त्रनकूं धोमने, कांसे-तामेके पात्रनकूं गलायकें नए बनामने, कांजी दूध दही मठा इनकूं फेंकने. इन सिवाय गुडादिक रसकूं राखने".

मरीचि ऋषिने कह्यो हे के "चाण्डाल यदि घरमें आ जाय तो घरकूं लीपनो ओर घरमें अजाने रहें तो गृहको दहन करनो. ओर धान्य, सर्वबीज, गुडादिक रस, कसूम्भ, रूई इत्यादिककी जलप्रोक्षणसूं तथा अग्नि उनके चारो आडीं फिरायवेसूं शुद्धि होय हे. ऐसें ही देवालयमें वा अपने घरमें पशुकी हिंसा भई होय अथवा दुष्ट लोक रहे होंय तो पूर्वोक्त दहन-खननादि पांच प्रकारकी गृहशुद्धि करकें फिर पावमानी प्रभृति वेदके मन्त्रनसूं तथा सुवर्ण कुशके जलसूं गोमूत्रादिकसूं घरको प्रोक्षण कर ब्राह्मणभोजनादिक यथाशक्ति करावने".

ओर मोकूं एसो मालूम पडे हे के पराशरने कह्यो हे जो "चण्डाल देवालयमें अथवा घरमें वास कर जाय तो 30 गाय और एक बेल को दान ब्राह्मणनकूं करके पीछे पुनर्वास और देवायतन करनो.

27. रस्ता-गली प्रभृतिकी शुद्धिको विचार

पराशरने कह्यो हे के "गलीकी कीच, गलीको पानी, नवीन मार्ग, घास ये दिनमें सूर्यसूं ओर पवनसूं शुद्ध होवे हें तथा रात्रिमें चन्द्र-तारान-पवनसूं शुद्ध होवे हें".

याज्ञवल्क्यने भी "गलीकी कीच, जल, पक्के मकान, इनकूं नीच जाति, कुत्ता, कौआ भी छूयलें तो वे पवनसूं ही शुद्ध होय हें भलेई वा कीचपानीमें गोबर कांकरी मिली होंय तो भी पवनसूं ही शुद्ध हे".

पहलें जो कह आए के "प्रोक्षणं संहतानां तु" इकठ्ठी चीज होंय तो उनको प्रोक्षण करनो सो ईंटके घर इत्यादिमें वो वाक्य नहीं लगे किन्तु उनकी शुद्धि तो पवन मात्रसूं ही होय हे. ओर पहले जो "अरथ्यावसुधामेध्या" कहे आए हें ताको भाव ये हे के भोजनादिक कर्ममें गली पवित्र नहीं हे ओर भोजनादि सिवाय दूसरे कालमें गली शुद्ध हे. तासूं परस्पर विरोध न समझनो.

28. प्रकीर्ण शुद्धिको विचार

मर्यादासिन्धुमें शंख ऋषिको वचन हे के "स्त्रीनको मुख रतिसमयमें शुद्ध हे. बछडाको तथा बालकनको मुख दूध पीवेमें शुद्ध हे. विष्ठाके खायवे वारे जो काकादिक हे उनसूं भिन्न जो पक्षी हें उनको मुख फलके खायवेमें शुद्ध हे. कुत्तानको मुंह शिकारके समयमें शुद्ध हे". जूठन करवेमें लार जो लगे हे वो अपवित्र इन पूर्वोक्त स्थलमें न समझनीं ये भाव शुद्धता कहवेको हे.

मनु-विष्णुने कह्यो हे के "कारीगरको हाथ सदा शुद्ध हे यदि हाथमें मलमूत्रादि न लगे होंय तो. दुकानमें बेचवेकेताईं फेलाई भई वस्तु पवित्र हे. अर्थात् सेंकडान मनुष्य वामें हाथ लगामें हें ताको दोष नहीं हे. दुकानदारके या ओरके घरकी चीज अशुद्ध हे. ब्रह्मचारीके हाथकी भिक्षा शुद्ध हे. कपडा इत्यादि अनेक वस्तु जिनमें बने हें वे कारखाने पवित्र हें".

बौधायनने कह्यो हे के "जलकी सतत धारा, पवनसूं उडे रज, गाय, घोडा, जलबिन्दु, छाया, माखी, टिड्डी, बकरा, बकरी, रणमें हाथी, छत्र, सूर्यचन्द्रमाकी कान्ति, पृथ्वी, अग्नि, रज, पवन, जल दही, घी, दूध इतने पदार्थ स्पर्श करवेमें शुद्ध हें". अर्थात् इन पूर्वोक्त पदार्थनकूं अशुद्धको स्पर्श होय तो हूं शुद्ध ही समझने. यद्यपि यहां गाय-बकरीकी समानता बताई हे पर याज्ञवल्क्यको एसो वचन हे के बकरी, घोडाको मोढो शुद्ध हे ओर गायको मोढो अशुद्ध हे. तासूं पात्रादिकमें जो गायको मोढो लगे तो वो पात्र अपवित्र होय हे ओर घोडा-बकरीको मोढो लगे तो वो पात्र शुद्ध होय हे इतनो भेद समझनो.

एसे हीं यहां जलबिन्दुनकूं पवित्र बताए हें पर वे जलबिन्दु "नखाग्रके, केशके, कपडा पछांटवेके, कपडाके छेडा निचोडवेके होंय तो अपवित्र हें, अलक्ष्मीकर हें" ऐसें लिङ्गपुराणमें वाक्य हे. अपरार्कमें एसें कह्यो हे के जलबिन्दुकूं पवित्र बताए हें ताको आशय ये हे के शुद्ध जलके जो बिन्दु हें वे पवनसूं उडके चाण्डालादिकनसूं छूयके भी जो अपने अङ्गकूं स्पर्श करे तो भी दोष नहीं हे. ओर याज्ञवल्क्यने जो कह्यो हे के "मुखके थूकके बिन्दु तथा आचमनके बिन्दु पवित्र हें" तामें इतनो विशेष समझनो के "मुखके बिन्दु अङ्गपे पडें तो अशुद्ध हें" एसो वशिष्टवाक्य हे. मनुने कह्यो हे "आचमनके बिन्दु जो पायपे भी पडें तो उनसूं अशुद्धि नहीं होय हे". वसिष्ठवाक्यमें कह्यो के थूक अङ्गपे पडे तो अशुद्ध हे तासूं ये भी सिद्ध होय हे के भगवान्के भोगके ताईं जो समाग्री करी जाय वामें भी मोढेके छींटा उडके पडें तो वो सामग्रीप्रभृति अशुद्ध होय हे. ताहीसूं श्रीजगन्नाथरायजी प्रभृति महास्थलनमें पाकादिक सेवा करवेवारे सब मुडबन्दा बांधकें ही सेवा करे हें एसो आद्याऽपि शिष्टाचार हे.

अब पहले जो कह आए के छाया शुद्ध हे सो छाया चाण्डालभिन्न चहिये. क्योंके "चाण्डाल पतित श्वपाक की छाया, दीआ ओर खाट की छाय, रातमें पीपरकी छाया, नीच मनुष्यकी छाया अपवित्र हे. इन छायानके पडवेसूं स्नान करनो चहिये" इत्यादिक यम-अङ्गिरा ऋषिके वचन हें. ये छाया निषिद्ध हें तासूं चन्दोआकी डेरा-तम्बूनकी छायामें भोजन करवेमें दोष नहीं हे. ब्रह्मपुराणमें जो एसो वचन हे के "चाण्डाल-पतितकी

छायाके स्पर्शमें दोष नहीं हे" ताको भाव ये हे के अजानमें वा छायापे पांव पडे तो दोष नहीं. अथवा चार युग(सोल्हे हाथसूं) अधिक छाया होय तो दोष नहीं हे.

ओर अग्नि शुद्ध हे एसें जो पहले कह्यो सो चाण्डाल-शव इनसूं भिन्न जो हें उनको ही अग्नि पवित्र समझनो. ऐसें ही पृथ्वी, दही, जल प्रभृतिकी भी व्यवस्था समझनीं.

ओर रज भी पवनसूं उडो शुद्ध हे पर "बकरी, गधा भेड, कुत्ता, बुहारी, वस्त्र, कौआ, ऊंट, घुघ्घू, सूहर, गामके पक्षी इन सबनकी उडायो रज अपवित्र हे. आयुष्य, लक्ष्मी इत्यादिकनकूं नाश करवेवारो हे. तासूं वो रज जो शरीरपे पडो होय तो पोंछ डारनो" एसें विज्ञानेश्वरने कह्यो हे एसें शातातप, स्मृत्यन्तरको वचन मिताक्षरमें हे. पवित्र रज मर्यादासिन्धुमें गरुडपुराणके वचनसूं बताए हें. "हाथी, घोडा, रथ, धान्य, गाय, पुत्राङ्ग इनको रज अत्यन्त पवित्र हे". अपरार्कमें शंखऋषिको एसो वचन हे के "पवनसूं उडाए भए अग्नि, रज धूंआ ये पवित्र हें".

अब पहलें जो कह आएके मक्षिका पवित्र हे सो अकेली मक्षिका ही न समझनीं किन्तु डांस, माछर, चेंटी इत्यादि भी समझने एसें अपरार्कमें लिख्यो हे.

ओर पवन जो शुद्ध पहलें कह्यो सो चलतो पवन शुद्ध समझनो. कपडा इत्यादिसूं करो पवन अशुद्ध हे. लिङ्गपुराणमें कह्यो हे के वस्त्रके छेडाको पवन, सूपको, हाथको, मुखको पवन स्पर्शसूं ही पूर्वजन्मके पुण्यकूं हरवेवारे हें.

बृहस्पतिने कह्यो हे के

"द्राक्षाको यन्त्र, इक्षुको यन्त्र, बडो कारखानो अथवा खान, कारीगरको हाथ, दूध दोहवेकी दोहनीं ये सब शुद्ध हें. थोडे अपवित्र एसे बालक तथा स्त्रीन ने करे भए जो कार्य हें वे शुद्ध हें. गोबर अच्छे स्थानमेंसूं उठायो भयो शुद्ध हे. श्मशानमें भी अच्छी जगे गोबर पडो होय तो शुद्ध हे. गामके बाहरकी माटी शुद्ध हे जो वामें मल-मूत्रको संसर्ग न होय तो".

ओर भी वचन स्त्रीप्रभृतिनकी शुद्धिके मर्यादासिन्धुप्रभृति ग्रन्थमें लिखे हें पर उनको उपयोग यहां नहीं हें तासूं नहीं लिखे हें.

29. आत्मशुद्धिको विचार

आत्माकी शुद्धि क्षेत्रज्ञकूं ईश्वरके ज्ञानसूं होत हे ऐसे याज्ञवल्क्यने कह्यो हे. "ज्ञान, तप, अग्नि, योग्य आहार, मृत्तिका, मन, जल, पवन, कर्म, सूर्य, काल ये सब पदार्थ देहीकी शुद्धि करवेवारे हें". मनुस्मृतिमें भी कह्यो हे के श्रवण-मननादि रूप ज्ञानसूं आत्मकी शुद्धि होत हे.

भगवान्की एकादशस्कन्धमें एसी आज्ञा हे के "शुद्ध विद्वान् मेरे स्मरणसूं आत्माकी शुद्धि करे".

तृतीयस्कन्धमें भी कह्यो हे के "भगवन् नामके श्रवण-कीर्तनसूं, नमनसूं चाण्डाल भी पवित्र होय हे. ओर दर्शनकी महिमा तो कहा कहनो".

द्वादशस्कन्धमें भी कह्यो हे के "विद्या, तप, प्राणायाम, सर्व प्राणीनसूं मैत्री, तीर्थस्नान, व्रत, दान, जप इन सबनके करेसूं वेसो आत्मा शुद्ध नहीं होय हे जेसो भगवान् हृदयमें आवे हें तब शुद्ध होय हे".

षष्ठस्कन्धमें श्रीशुकदेवजीने भी आज्ञा करी हे के "कोई एक महात्मा तो केवल भगवद्भक्तिसूं ही सर्वदोष दूर करे हें. जेसें सूर्यके प्रकाशसूं नीहार(कोहरा) दूर होय हे तेसें. कृच्छचान्द्रायणादिक करेसूं आत्मा वेसो शुद्ध नहीं होय हे जेसो भगवान्कूं सर्वस्व समर्पण करवेसूं तथा भगवद्भक्तनकी सेवासूं शुद्ध होय हे".

तासूं आत्माकी शुद्धि करवेमें भगवद्भक्ति ही दृढ उपाय हे.

कदाचित् कोई एसी शंका करे के आत्माकी शुद्धि ज्ञानसूं भी होय सके ओर भक्तिसूं भी होय सके एसें विकल्प हे. तहां समाधान ये हे के विकल्प नहीं हे, भक्ति ही आत्माशोधक हे. क्योंके ये पूर्व वाक्यनमें भक्तिकूं ही मुख्यता बताई हे. ओर दृष्टान्त भी दीनो हे के जेसें सूर्य अन्धेरेकूं दूर करे हे तेसें भक्ति पापकूं दूर करे हे. ओर ज्ञान पापकूं केसें दूर करे हे जेसें बांसके वनकूं अग्नि जरावे हे. सूर्यके प्रकाश भएपे अन्धकार निःशेष नष्ट होय हे. अग्नि लगेपे वनमेंसूं कोई बांस बच भी रहें हे. जो बच रहें हें उनमेंसूं पुनः अनेक बांस होय सके हें. तासूं भक्तिमें सूर्यको दृष्टान्त हे. तासूं भक्ति ही मुख्य हे. ओर ये भी शास्त्रमें रीति हे के पहलें साधारण साधन कहनो छेली बेर मुख्य साधन सिद्धान्त बतानो. तासूं भागवतमें पहलें ज्ञान बतायकें फिर भक्तिके महिमा बतायो हे. ओर फिर वाके पोषणके तांई अजामिलको उपाख्यान बतायो हे. वा उपाख्यानमें शिवभक्त अगस्त्यकी सम्मति बताई हे के या आख्यानकूं मलायपर्वतमें भगवान्की पूजा करते समयमें अगस्त्यऋषिने कह्यो हे तासूं ज्ञानसूं भी भगवद्भक्तनकूं तो भक्ति ही अधिक हे.

ओर लिङ्गशरीरकी शुद्धि आहारकी शुद्धिसूं होय हे, सो शुद्धि ज्ञानोपयोगी हे. "शुद्ध आहारसुं अन्तःकरण शुद्ध होत हे. अन्तःकरणकी शुद्धि होयवेपे ध्रवा स्मृति होते हे". ओर भी छान्दोग्यउपनिषद्में कह्यो हे के "मन हे सो अन्न मय हे, प्राण हे सो जलमय हे, वाणी हे सो तेजोमय हे". अर्थात् अन्नसूं ही मन, प्राण, वाणी इनको पोषण होत हे और ये सब अन्नको ही परिणाम हे. अन्नकी शुद्धि अपने-अपने वर्णाश्रमकी वृत्तिसूं अन्नकूं सम्पादित करिके, वा अन्नकूं सिद्ध करीके वाकूं भगवान्कूं समर्पित करीके महाप्रसादके रूपमें भोजन करिवेसूं होत हे. ये बात ब्रह्माण्डपुरारके वचनसूं हरिवल्लभसुधोदय निबन्धमें सिद्ध करी हे : "भगवत्प्रसादी जल तथा अन्नकूं लेनो चहिये तब सर्व मनोरथ सिद्ध होंय हें". पद्मपुराणमें कह्यो हे के "जो भगवत्प्रसादी अन्नकूं खाय हें उनकूं एकेक कोरमें सो-सो

चान्द्रायण करवेसूं भी अधिक फल मिले हे. अन्य देवको प्रसाद खायवेपे द्विजकूं चान्द्रायण व्रत करनो. भगवत्प्रसादकूं खायवेतें सर्व पाप दूर होंय हें".

तासूं ज्ञानपक्षमें भी स्मरणादिरूप भक्ति उपकार करवेवारि हे तासूं अवश्य करनी चहिये ओर वो सहज होय सके एसी हे. तासूं सेवोपयोगी आत्माकी शुद्धिके अर्थ भी भगवत्स्मरणादि ही करने.

एसें या ग्रन्थमें श्रीवल्लभाचार्यजीके चरणारविन्दकी कृपासूं बाह्यशुद्धि ओर आभ्यंरतशुद्धि अनेक ग्रन्थके आशय देखकें प्रकाशित करी हे.

इति श्रीमन्मथुरावास्तव्य-तैलङ्गद्विज-शास्त्रिरमेशमदात्मज-
शीघ्रकवि-नन्दकिशोरविरचिता
द्रव्यशुद्धिदीपिकाकी व्रजभाषाटीका सारदर्शिनी नाम्नी समाप्ता.